खण्ड-424, अंक-1
गुरुवार, 28 ज्येष्ठ, शक संवत् 1920
(18 जून, 1998 ई0)

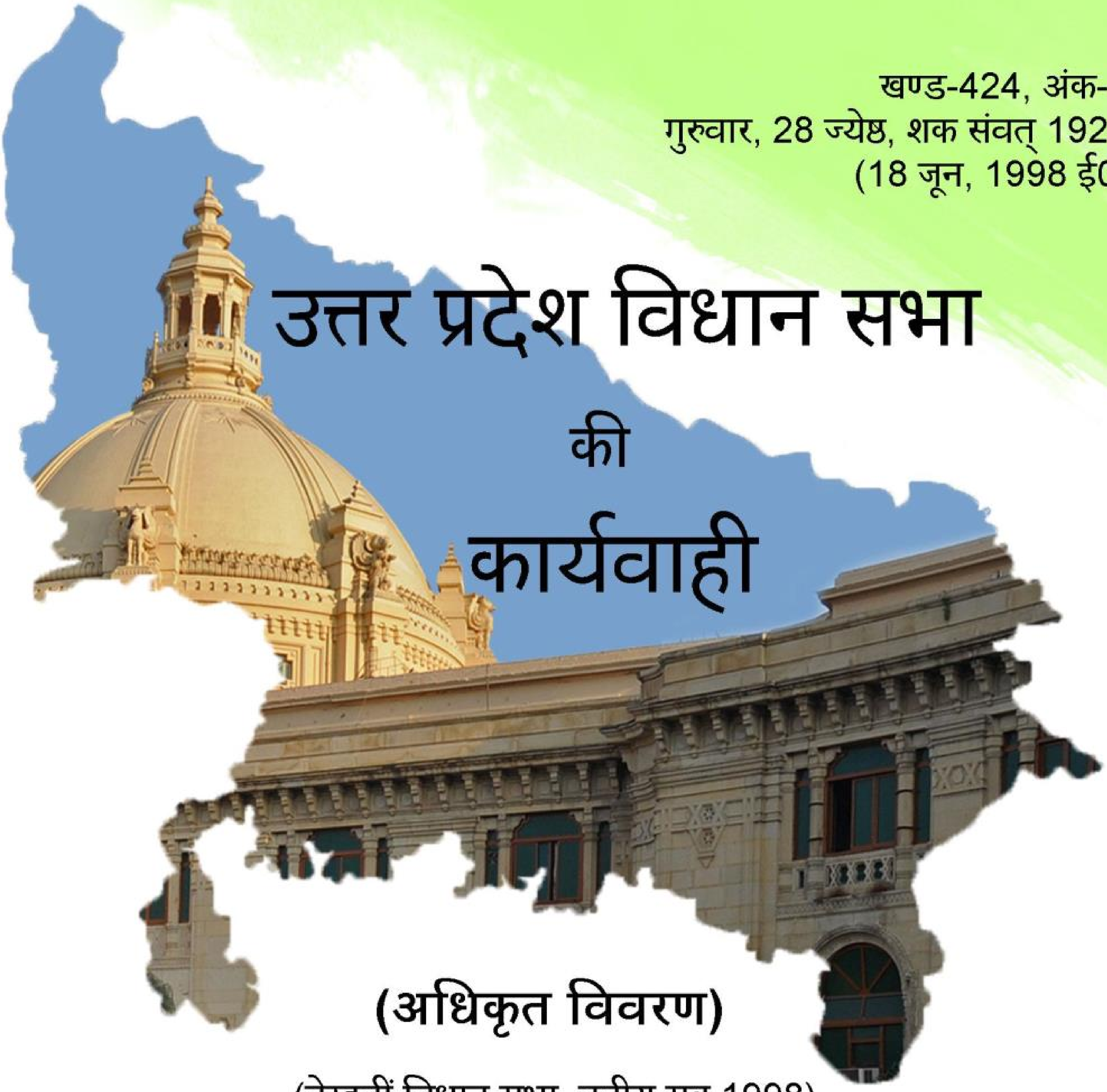

उत्तर प्रदेश विधान सभा

की

कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

(तेरहवीं विधान सभा, तृतीय सत्र 1998)

खण्ड 424 में 10 अंक है

उत्तर प्रदेश विधान सभा सचिवालय (कार्यवाही अनुभाग) द्वारा प्रकाशित

मुद्रक:
निदेशक, राजकीय मुद्रण एवं लेखन सामग्री, लखनऊ, उत्तर प्रदेश (भारत)
1998

मूल्य : बिना महसूल 25 पैसे, महसूल सहित 31 पैसे |
वार्षिक चन्दा : बिना महसूल 10 रुपये, महसूल सहित 21 रुपये |

विषय सूची

विषय	पृष्ठ संख्या
तेरहवीं विधान सभा के सदस्यों की सूची, महामहिम राज्यपाल, मंत्रिपरिषद्, नेता विरोधी दल, उत्तर प्रदेश विधान सभा के पदाधिकारियों तथा अधिष्ठाता मण्डल की सूची	क–ट
उपस्थित सदस्य	ड
राष्ट्रीय गीत	1
वर्तमान विधान सभा के सदस्य श्री सत्य प्रकाश विकल के निधन पर शोकोद्गार...	2–5
विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य श्री गौरी शंकर भइया, श्री विचित्र नारायण शर्मा, श्री विश्वम्भर नाथ पाण्डेय तथा श्री बाबू लाल गोयल के निधन पर शोकोद्गार ...	5–15
राजस्थान के महामहिम राज्यपाल श्री दरबारा सिंह के निधन पर शोकोद्गार	15–18

उत्तर प्रदेश विधान सभा

उत्तर प्रदेश विधान सभा

उत्तर प्रदेश विधान सभा

(तेरहवीं विधान सभा के सदस्यों की सूची)

1–अकबर हुसैन, श्री	मुरादाबाद
2–अक्षयवर लाल, श्री	बहराइच
3–अखिलेश कुमार सिंह, श्री	रायबरेली
4–अजय कुमार पोइया, श्री	मथुरा
5–अजय प्रताप सिंह उर्फ लल्ला भइया, श्री	गोण्डा
6–अजय भट्ट, श्री	अल्मोड़ा
7–अजय राय, श्री	वाराणसी
8–अजित कुमार मेहरोत्रा, श्री	सीतापुर
9–अतीक अहमद, श्री	इलाहाबाद
10–अतुल कुमार, श्री	मेरठ
11–अनिल कुमार, श्री	बलिया
12–अनीस खां, श्री	पीलीभीत
13–अफजाल अंसारी, श्री	गाजीपुर
14–अफजाल अहमद, श्री	जौनपुर
15–अफरोज अली खां, श्री	रामपुर
16–अब्दुल कलाम, श्री	बस्ती
17–अब्दुल कलाम, श्री	वाराणसी
18–अब्दुल खालिक, श्री	अलीगढ़
19–अब्दुल मन्नान, श्री	हरदोई
20–अमर मणि, श्री	महराजगंज
21–अमित अग्रवाल, श्री	मेरठ
22–अमीर आलम खान, श्री	मुजफ्फरनगर
23–अम्बरीष कुमार, श्री	हरिद्वार
24–अम्बिका चौधरी, श्री	बलिया
25–अम्मार रिजवी, डा०	सीतापुर
26–अयोध्या प्रसाद पाल, श्री	फतेहपुर
27–अरविन्द कुमार जैन, श्री	ललितपुर
28–अरविन्द गिरि, श्री	खीरी
29–अरिमर्दन सिंह, श्री	महोबा
30–अरुण प्रताप सिंह, श्री	सुल्तानपुर
31–अरुणवीर सिंह, श्री	बहराइच
32–अवधेश प्रसाद, श्री	फैजाबाद
33–अशफाक अहमद, श्री	बरेली
34–अशोक कुमार, श्री	जौनपुर
35–अशोक कुमार सिंह, श्री	रायबरेली
36–अशोक बाजपेई, डा०	हरदोई
37–अशोक यादव, श्री	फिरोजाबाद
38–आनन्द प्रकाश, श्री	पडरौना
39–आर० के० चौधरी, श्री	लखनऊ
40–आर० के० सिंह पटेल, श्री	बांदा
41–आलमबदी, श्री	आजमगढ़
42–इकबाल महमूद, श्री	मुरादाबाद
43–इन्द्रजीत सरोज, श्री	इलाहाबाद
44–इन्द्रदेव, श्री	बिजनौर
45–इल्म सिंह, श्री	सहारनपुर
46–उदय राज यादव, श्री	उन्नाव
47–उमाकान्त यादव, श्री	जौनपुर
48–उर्मिला देवी, श्रीमती	मैनपुरी
49–उवैदुर्रहमान, श्री	गोण्डा
50–ओइम्वेश, स्वामी	बिजनौर
51–ओंकार सिंह, श्री	एटा
52–ओमकार सिंह, श्री	बदायूं
53–ओम प्रकाश, श्री	एटा
54–ओम प्रकाश गुप्त, श्री	सीतापुर
55–ओम प्रकाश सिंह, श्री	मिर्जापुर

* नोट :– दिनांक 15 जून, 1998 तक यथासंशोधित।

56–कमला प्रसाद रावत, श्री बाराबंकी
57–कमलेश कुमार सिंह, श्री बलरामपुर
58–कल्याण सिंह, श्री अलीगढ़
59–कंवर पाल सिंह मास्टर, श्री सहारनपुर
60–काजिम अली खां, उर्फ नवेद मियां, श्री रामपुर
61–काजी मोहम्मद मुहिउद्दीन, श्री हरिद्वार
62–काशिम हसन, श्री फतेहपुर
63–काशीनाथ, श्री सुल्तानपुर
64–किशन लाल बघेल, सेठ आगरा
65–कृपा शंकर सिंह, श्री उन्नाव
66–कृष्ण चन्द्र पुनेठा, श्री पिथौरागढ़
67–कृष्णपाल सिंह, श्री कानपुर देहात
68–कृष्णा राज, श्रीमती खीरी
69–केदार सिंह फोनिया, श्री चमोली
70–केशरी नाथ त्रिपाठी, श्री इलाहाबाद
71–केशव मेहरा, श्री आगरा
72–के० सी० सिंह, "बाबा" उधम सिंह नगर
73–कैलाश, श्री गाजीपुर
74–कैलाश सिंह राजपूत, श्री फर्रुखाबाद
75–कौकब हमीद, श्री मेरठ
76–कोविद कुमार, श्री शाहजहांपुर
77–कौशल किशोर, डा० खीरी
78–गंगा प्रसाद पुष्कर, श्री आगरा
79–गंगा बख्श सिंह, श्री उन्नाव
80–गंगा सिंह चौहान, श्री हरदोई
81–गजेन्द्र कुमार मुन्ना, श्री मेरठ
82–गणेश, श्री गाजीपुर
83–गुलाब देवी, श्रीमती मुरादाबाद
84–गोपाल कृष्ण, श्री पीलीभीत
85–गोमती यादव, श्री लखनऊ
86–गोरखनाथ पाण्डेय, श्री भदोही
87–गौरी देवी, श्रीमती गोरखपुर
88–गौरी शंकर (एडवोकेट), श्री लखनऊ
89–चन्द्र किशोर, श्री महराजगंज
90–चन्द्र नाथ सिंह, श्री प्रतापगढ़
91–चन्द्र पाल सिंह यादव, श्री झांसी
92–चन्द्रमणि कान्त सिंह, श्री बहराइच
93–चन्द्रेश पासवान, श्री गोरखपुर
94–चेतराम, श्री शाहजहांपुर
95–छब्बू पटेल, श्री वाराणसी
96–छोटे लाल वर्मा डा०, महोबा
97–छोटे लाल, श्री हरदोई
98–छोटे लाल गंगवार, मास्टर बरेली
99–छोटे लाल राजभर, श्री बलिया
100–छोटे सिंह यादव, श्री फर्रुखाबाद
101–जगपाल, श्री सहारनपुर
102–जगत पाल सिंह, मेजर मुरादाबाद
103–जगदम्बिका पाल, श्री बस्ती
104–जगदीश नारायण (मुन्ना), श्री जौनपुर
105–जगदीश सिंह राणा, श्री सहारनपुर
106–जटा शंकर, श्री बहराइच
107–जमालुद्दीन सिद्दीकी, श्री फर्रुखाबाद
108–जय नारायन तिवारी, श्री सुल्तानपुर
109–जयपाल सिंह, श्री मेरठ
110–जय प्रकाश, श्री गाजियाबाद
111–जय प्रकाश निषाद, श्री देवरिया
112–जय प्रताप सिंह, श्री सिद्धार्थनगर
113–जयवीर सिंह भदौरिया, श्री इटावा
114–जितेन्द्र कुमार जायसवाल उर्फ पप्पू भइया, श्री गोरखपुर
115–जोखू लाल यादव, श्री इलाहाबाद
116–ज्ञान चन्द, श्री उत्तरकाशी
117–ज्ञानवती सिंह, डा० अलीगढ़
118–ज्ञानेन्द्र सिंह, श्री महराजगंज
119–ज्वाला प्रसाद यादव, श्री जौनपुर
120–तारकेश्वर प्रसाद शुक्ल, श्री गोरखपुर
121–तिलकराज बेहड़, श्री उधम सिंह नगर
122–तेजभान सिंह, श्री सुल्तानपुर
123–तोताराम, श्री मुरादाबाद
124–तौफीक अहमद, श्री सिद्धार्थनगर
125–दद्दू प्रसाद, श्री बांदा
126–दयाशंकर, श्री जालौन
127–दल बहादुर कोरी, श्री रायबरेली
128–दलवीर सिंह, श्री अलीगढ़

129–दिलीप कुमार, श्री बहराइच
130–दिवाकर विक्रम सिंह, श्री सिद्धार्थनगर
131–दीपक कुमार, श्री उन्नाव
132–दीप लाल भारती, श्री पडरौना
133–दुर्गा प्रसाद यादव, श्री आजमगढ़
134–देवेन्द्र सिंह उर्फ भोले सिंह, श्री कानपुर देहात
135–देवेन्द्र सिंह यादव, कुंवर एटा
136–धनराज यादव, श्री सिद्धार्थनगर
137–धनीराम वर्मा, श्री इटावा
138–धर्मज्ञ मिश्र, डा० हरदोई
139–धर्मपाल सिंह, श्री बरेली
140–धर्मराज निषाद, श्री अम्बेडकर नगर
141–नन्दराम, श्री बरेली
142–नरेन्द्र, श्री आजमगढ़
143–नरेन्द्र कुमार सिंह गौर, डा० इलाहाबाद
144–नरेन्द्र सिंह चौधरी, श्री कानपुर देहात
145–नरेन्द्र सिंह भाटी, श्री बुलन्दशहर
146–नरेन्द्र सिंह यादव, श्री फर्रुखाबाद
147–नरेन्द्र सिंह सिशौदिया, श्री गाजियाबाद
148–नरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री हरदोई
149–नवाब सिंह नागर, श्री गाजियाबाद
150–नारायण राम दास, श्री अल्मोड़ा
151–निर्भय पाल शर्मा, श्री सहारनपुर
152–नीरज चतुर्वेदी, श्री कानपुर नगर
153–नेतराम सिंह, श्री एटा
154–''पटेल'' राम कुमार वर्मा, श्री खीरी
155–परमानन्द दण्डी, स्वामी रामपुर
156–परवेज हलीम खां, श्री मेरठ
157–पीटर फैन्थम नाम-निर्देशित सदस्य
158–पीतम राम, श्री पीलीभीत
159–पूरन सिंह, बुन्देला, श्री ललितपुर
160–पूर्णमासी पंकज, श्री भदोही
161–प्रदीप कुमार, श्री मुजफ्फरनगर
162–प्रभा द्विवेदी, श्रीमती फर्रुखाबाद
163–प्रभु नारायन सिंह यादव, श्री वाराणसी
164–प्रमोद कुमार, श्री प्रतापगढ़
165–प्रेम पाल सिंह यादव, श्री बदायूं
166–प्रेम प्रकाश सिंह, श्री देवरिया
167–[illegible]लता कटियार, श्रीमती कानपुर नगर
168–[illegible] स्वरूप पाठक, श्री बदायूं
169–फतेह बहादुर, श्री महराजगंज
170–फरीद महफूज किदवई, श्री बाराबंकी
171–फागू, श्री मऊ
172–बंश नारायण सिंह, श्री भदोही
173–बंशीधर भगत, श्री नैनीताल
174–बचनूराम पटेल, श्री वाराणसी
175–बच्चा पाठक, श्री बलिया
176–बनवारी लाल दोहरे, श्री फर्रुखाबाद
177–बनारसी दास चान्दना, श्री मेरठ
178–बरखूराम वर्मा, श्री जौनपुर
179–बांके लाल सोनकर, श्री जौनपुर
180–बादशाह सिंह, श्री हमीरपुर
181–बाबू खां, श्री हरदोई
182–बाबू राम, श्री जालौन
183–बाबू राम यादव, श्री मैनपुरी
184–बाबू लाल, श्री आगरा
185–बाबू लाल, श्री उन्नाव
186–बाबू लाल कुशवाहा, श्री बांदा
187–बाल चन्द्र मिश्र, श्री कानपुर नगर
188–बालेश्वर त्यागी, श्री गाजियाबाद
189–बावन सिंह, श्री गोण्डा
190–बिजेन्द्र आर्य, श्री मुजफ्फरनगर
191–बिन्दु लाल, श्री गोण्डा
192–बिहारी लाल आर्य, श्री झांसी
193–बुनियाद हुसैन अंसारी, श्री सीतापुर
194–बेचन राम, श्री गोरखपुर
195–ब्रजेन्द्र पाल सिंह, श्री मुरादाबाद
196–भगवती प्रसाद, श्री कानपुर देहात
197–भगवान सिंह शाक्य, श्री बदायूं
198–भरत सिंह, श्री बलिया
199–भाई लाल, श्री मिर्जापुर
200–भारत सिंह रावत, श्री गढ़वाल
201–भीम प्रसाद, श्री अम्बेडकर नगर
202–भोनू, श्री गाजीपुर
203–भोला शंकर मौर्य, श्री बदायूं

204–मंगल सिंह सैनी, श्री मुरादाबाद
205–मंजू, श्रीमती बलिया
206–मण्डलेश्वर सिंह, श्री आगरा
207–मतेश चन्द्र सोनकर, श्री इलाहाबाद
208–मथुरा प्रसाद, श्री कानपुर देहात
209–मलखान सिंह, श्री अलीगढ़
210–मस्तराम, श्री उन्नाव
211–महाराज सिंह यादव, श्री इटावा
212–महेन्द्र अरिदमन सिंह, राजा आगरा
213–महेन्द्र कुमार, श्री बुलन्दशहर
214–महेन्द्र कुमार, श्री सीतापुर
215–महेन्द्र नाथ पाण्डेय, डा० वाराणसी
216–महेन्द्र पाल निषाद, श्री बांदा
217–महेन्द्र सिंह यादव, श्री बुलन्दशहर
218–मातवर सिंह कण्डारी, श्री टिहरी गढ़वाल
219–मानिक चन्द यादव, श्री मैनपुरी
220–माया प्रसाद, श्रीमती खीरी
221–मारकण्डेय चन्द, श्री गोरखपुर
222–मिथलेश कुमारी, श्रीमती एटा
223–मुख्तार अन्सारी, श्री मऊ
224–मुन्ना चौहान, श्री देहरादून
225–मुन्ना लाल मौर्य, श्री फतेहपुर
226–मुरलीधर, श्री फतेहपुर
227–मुराद लारी, श्री देवरिया
228–मुस्ताक सोलंकी, श्री कानपुर नगर
229–मुस्लिम, डा० रायबरेली
230–मुहर सिंह अम्बाडी, श्री इटावा
231–मूल चन्द, श्री बिजनौर
232–मोती लाल, श्री खीरी
233–मोहन सिंह रावत गांववासी, श्री गढ़वाल
234–मोहम्मद मुकीम, श्री सिद्धार्थनगर
235–यशपाल सिंह चौहान, श्री अलीगढ़
236–यशवंत, श्री आजमगढ़
237–योगेन्द्र कुमार, श्री बदायूं
238–योगेन्द्र सिंह, श्री देवरिया
239–रंगनाथ मिश्र, श्री भदोही
240–रंग बहादुर पटेल, श्री इलाहाबाद
241–रघुनाथ सिंह चौहान, श्री अल्मोड़ा
242–रघुराज प्रताप सिंह "राजा भईया", कुंवर प्रतापगढ़
243–रघुवर दयाल वर्मा, श्री फिरोजाबाद
244–रणधीर सिंह, श्री मुजफ्फरनगर
245–रतनजीत प्रताप नारायण सिंह, कुंवर पडरौना
246–रमापति शास्त्री, श्री गोण्डा
247–रमेश पोखरियाल "निशंक", डा० गढ़वाल
248–रमेश राही, श्री सीतापुर
249–रवीन्द्र पुण्डीर, प्रो० मेरठ
250–रवीन्द्र प्रताप चौधरी, श्री सिद्धार्थनगर
251–रवीन्द्र शुक्ला, श्री झांसी
252–राकेश त्यागी, श्री बुलन्दशहर
253–राकेश धर त्रिपाठी, श्री इलाहाबाद
254–राकेश सोनकर, श्री कानपुर नगर
255–राजधारी, श्री बलिया
256–राजपाल त्यागी, श्री गाजियाबाद
257–राजपाल सिंह, श्री मुजफ्फरनगर
258–राज राय सिंह, श्रीमती पीलीभीत
259–राजा गज़नफर अली खां, श्री बिजनौर
260–राजा राम पाण्डेय, श्री प्रतापगढ़
261–राजा राम पाल, श्री कानपुर देहात
262–राजीव कुमार सिंह, श्री बाराबंकी
263–राजेन्द्र, श्री गाजीपुर
264–राजेन्द्र प्रताप सिंह उर्फ मोती सिंह, श्री प्रतापगढ़
265–राजेन्द्र सिंह, श्री देहरादून
266–राजेन्द्र सिंह पटेल, श्री फतेहपुर
267–राजेश अग्रवाल, श्री बरेली
268–राजेश कुमार सिंह, श्री मुरादाबाद
269–राधेश्याम, श्री कानपुर देहात
270–राधेश्याम गुप्त, श्री फतेहपुर
271–राधेश्याम जायसवाल, श्री सीतापुर
272–राधेश्याम सिंह, श्री पडरौना
273–राम अचल राजभर, श्री अम्बेडकर नगर
274–राम अवतार मिश्रा, श्री शाहजहांपुर

275–राम आसरे पासवान, श्री बस्ती
276–राम आसरे सिंह कानपुर नगर
कुशवाहा, डा०
277–राम औतार शाक्य, श्री मैनपुरी
278–राम कृपाल, श्री इलाहाबाद
279–राम खिलाड़ी, श्री बदायूं
280–राम चन्द्र मौर्य, श्री मिर्जापुर
281–राम चन्दर यादव, श्री फैजाबाद
282–रामजग, श्री आजमगढ़
283–रामतेज यादव, एडवोकेट बहराइच
284–रामदेव वैश्य आचार्य, श्री बाराबंकी
285–राम नक्षत्र, श्री पडरौना
286–राम नरेश रावत, श्री गाजियाबाद
287–राम नरेश यादव, श्री आजमगढ़
288–रामनाथ, श्री प्रतापगढ़
289–रामपाल राजवंशी, श्री सीतापुर
290–रामपाल वर्मा, श्री हरदोई
291–रामपाल सिंह, श्री गोण्डा
292–राम प्यारे, श्री आजमगढ़
293–राम प्रताप सिंह, श्री गोण्डा
294–राम प्रसाद चौधरी, श्री बस्ती
295–राम बाबू हरित, श्री आगरा
296–राम रतन यादव, श्री सुल्तानपुर
297–राम लखन, श्री सुल्तानपुर
298–राम ललित चौधरी, श्री बस्ती
299–राम विशुन आजाद, श्री गोण्डा
300–रामवीर उपाध्याय, श्री अलीगढ़
301–रामवीर सिंह, श्री फिरोजाबाद
302–राम शंकर पाल, श्री उन्नाव
303–राम सखी, श्रीमती अलीगढ़
304–राम सिंह, डा० अलीगढ़
305–राम सिंह, श्री बुलन्दशहर
306–राम सिंह सैनी, श्री हरिद्वार
307–राम सेवक सिंह, श्री इलाहाबाद
308–राम सेवक सिंह, श्री बदायूं
309–राम स्वरूप शर्मा, श्री मथुरा
310–राम स्वरूप सिंह, श्री बिजनौर
311–राम हर्ष सिंह, श्री सुल्तानपुर
312–रामाधार सिंह, श्री हमीरपुर
313–रामेश्वर दयाल बाल्मीकि, श्री मैनपुरी
314–रामेश्वर सिंह यादव, श्री एटा
315–रिफाकत हुसैन चौधरी, श्री मुरादाबाद
316–रूप चौधरी, श्री मेरठ
317–रेवती रमण सिंह इलाहाबाद
उर्फ "मणी", कुंवर
318–लक्ष्मी कान्त बाजपेयी, डा० मेरठ
319–लक्ष्मी नारायण चौधरी, श्री मथुरा
320–लल्लू सिंह, श्री फैजाबाद
321–लवकुश कुमार, श्री बिजनौर
322–लाखी राम जोशी, श्री टिहरी गढ़वाल
323–लालजी टण्डन, श्री लखनऊ
324–लालजी वर्मा, श्री अम्बेडकर नगर
325–लालमणि प्रसाद, श्री बस्ती
326–लाल सिंह वर्मा, श्री इटावा
327–लोकपति त्रिपाठी, श्री मिर्जापुर
328–वकार अहमद शाह, डा० बहराइच
329–वसीम अहमद, श्री आजमगढ़
330–वहोरन लाल मौर्य, श्री बरेली
331–विक्रमाजीत मौर्य, श्री इलाहाबाद
332–विजमा यादव, श्रीमती इलाहाबाद
333–विजय कुमार, श्री गाजीपुर
334–विजय पाल सिंह, श्री आगरा
335–विजय प्रकाश, श्री इलाहाबाद
336–विजय सिंह, श्री सोनभद्र
337–विद्या सागर गुप्ता, श्री लखनऊ
338–विनय कुमार पाण्डेय गोण्डा
"विन्नू", श्री
339–विनोद कुमार सिंह गोण्डा
उर्फ पंडित सिंह, श्री
340–विनोद मणि, श्री महराजगंज
341–विभूति प्रसाद निषाद, श्री आजमगढ़
342–विरेन्द्र सिंह, श्री मुजफ्फरनगर
343–विरेन्द्र सिंह, श्री वाराणसी
344–विरेन्द्र सिंह सिरोही, श्री बुलन्दशहर
345–विवेक कुमार सिंह, श्री बांदा
346–विशन सिंह चुफाल, श्री पिथौरागढ़

347–विशम्भर सिंह, श्री मथुरा
348–विश्वनाथ, श्री पडरौना
349–वीरेन्द्र प्रताप सिंह उर्फ मुन्ना, श्री शाहजहांपुर
350–वीरेन्द्र सिंह सोलंकी, श्री एटा
351–वेद प्रकाश, श्री बस्ती
352–वेद प्रकाश सिंह, एम० एस०, डा० बिजनौर
353–शब्बीर अहमद, श्री बहराइच
354–शरदवीर सिंह, श्री शाहजहांपुर
355–शिव गणेश लोधी, एडवोकेट रायबरेली
356–शिव चरन प्रजापति, श्री हमीरपुर
357–शिव पाल सिंह यादव, श्री इटावा
358–शिव पूजन राम, श्री वाराणसी
359–शिव प्रताप शुक्ल, श्री गोरखपुर
360–शिव बहादुर सक्सेना, श्री रामपुर
361–शिव शंकर, श्री बांदा
362–शिव सिंह चक, श्री फिरोजाबाद
363–शिवा कान्त, श्री प्रतापगढ़
364–शिवेन्द्र सिंह उर्फ शिव बाबू, श्री महराजगंज
365–शिशुपाल सिंह यादव, श्री एटा
366–शेर बहादुर, श्री अम्बेडकर नगर
367–श्याम किशोर यादव, श्री लखनऊ
368–श्याम देव राय चौधरी, (दादा), श्री वाराणसी
369–श्याम प्रकाश, श्री हरदोई
370–श्याम लाल रावत, श्री सीतापुर
371–श्याम सुन्दर, श्री रायबरेली
372–श्याम सुन्दर शर्मा, श्री मथुरा
373–श्रीनिवास मणि, श्री देवरिया
374–श्रीराम, श्री जालौन
375–श्रीराम, श्री मऊ
376–श्रीराम यादव, श्री जौनपुर
377–संग्राम सिंह, श्री बाराबंकी
378–संजय गर्ग, श्री सहारनपुर
379–संजय सिंह, श्री मुजफ्फरनगर
380–संदीप अग्रवाल, श्री मुरादाबाद
381–सतीश जतारिया, श्री झांसी
382–सतीश महाना, श्री कानपुर नगर
383–सतीश शर्मा, श्री बुलन्दशहर
384–सत्य प्रकाश सोनकर, श्री वाराणसी
385–सन्त, श्री गोरखपुर
386–सन्त राम सिंह, श्री जालौन
387–समर पाल सिंह, श्री मेरठ
388–सरजीत सिंह डंग, डा० मिर्जापुर
389–सरदार सिंह, श्री मथुरा
390–सरवर अली खां, श्री बाराबंकी
391–सरस्वती प्रताप सिंह, श्री खीरी
392–सर्वेश कुमार उर्फ राकेश कुमार, कुंवर मुरादाबाद
393–सिंहासन, श्री गाजीपुर
394–सीता राम निषाद, श्री फैजाबाद
395–सीमा द्विवेदी, श्रीमती जौनपुर
396–सुखदेवी वर्मा, श्रीमती इटावा
397–सुखपाल पाण्डेय, श्री बस्ती
398–सुखवीर सिंह पुण्डीर, श्री सहारनपुर
399–सुधाकर सिंह, श्री मऊ
400–सुबाष चन्द्र श्रीवास्तव, श्री देवरिया
401–सुमन लता सिंह, श्रीमती बरेली
402–सुरेन्द्र नाथ, श्री बाराबंकी
403–सुरेन्द्र प्रताप सिंह, श्री बरेली
404–सुरेश कुमार खन्ना, श्री शाहजहांपुर
405–सुरेश कुमार श्रीवास्तव, श्री लखनऊ
406–सुरेश चन्द्र आर्य, श्री उधम सिंह नगर
407–सुरेश चन्द्र तिवारी, श्री लखनऊ
408–सुशील शाक्य, श्री फर्रुखाबाद
409–सुशीला अग्रवाल, श्रीमती मुजफ्फरनगर
410–सूर्य प्रताप शाही, श्री देवरिया
411–सूर्य भान, श्री सुल्तानपुर
412–सौलत अली, श्री मुरादाबाद
413–स्वामी प्रसाद मौर्य, श्री रायबरेली
414–हरदेव सिंह, श्री बाराबंकी
415–हरपाल सिंह, श्री बुलन्दशहर
416–हरवंश कपूर, श्री देहरादून
417–हरिनारायण, श्री बलिया
418–हरि प्रसाद उर्फ घमड़ी, श्री सोनभद्र
419–हरि शंकर तिवारी, श्री गोरखपुर
420–हरि शंकर माहौर, श्री अलीगढ़
421–हरीश चन्द्र गंगवार, श्री बरेली
422–हरीश चन्द्र "हरीश जी", श्री वाराणसी
423–हीरा लाल गौतम, श्री आजमगढ़
424–हुकुम सिंह, श्री मुजफ्फरनगर
425–होराम सिंह, श्री बुलन्दशहर
426–रिक्त–

महामहिम राज्यपाल
श्री सूरजभान

मंत्रि-परिषद्

क्र०सं० नाम	कार्य विभाग (पोर्टफोलियो)
1–श्री कल्याण सिंह (मुख्य मंत्री)	सामान्य प्रशासन, गृह, गोपन, नियुक्ति, कार्मिक, सूचना, निर्वाचन, वित्त, न्याय, विधायी, राज्य सम्पत्ति, नागरिक उड्डयन, औद्योगिक विकास, प्रोटोकाल, संसदीय कार्य एवं सार्वजनिक उद्यम ।
2–श्री कलराज मिश्र	लोक निर्माण, पर्यटन
3–श्री लालजी टण्डन	आवास, नगर विकास
4–श्री ओम प्रकाश सिंह	सिंचाई, गन्ना विकास
5–श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव "हरीश जी"	समाज कल्याण, अनुसूचित जाति/ अनुसूचित जनजाति कल्याण, पिछड़ा वर्ग कल्याण ।
6–श्री नरेश अग्रवाल	ऊर्जा
7–श्री दिवाकर विक्रम सिंह	कृषि
8–डा० नरेन्द्र कुमार सिंह गौर	उच्च शिक्षा, प्राविधिक शिक्षा ।
9–श्री चौधरी नरेन्द्र सिंह	ग्राम्य विकास
10–श्री रमापति शास्त्री	स्वास्थ्य एवं चिकित्सा
11–श्री मारकण्डेय चन्द	लघु सिंचाई, ग्रामीण अभियंत्रण ।
12–श्री रघुवर दयाल वर्मा	वन
13–डा० नैपाल सिंह	माध्यमिक शिक्षा, भाषा ।
14–श्री सूर्य प्रताप शाही	आबकारी
15–श्री राम कुमार वर्मा	सहकारिता

उत्तर प्रदेश विधान सभा

क्र०सं० नाम	कार्य विभाग (पोर्टफोलियो)
16–श्रीमती प्रेमलता कटियार	महिला कल्याण, बाल विकास एवं पुष्टाहार ।
17–श्रीमती प्रभा द्विवेदी	श्रम
18–श्री सरदार सिंह	वस्त्र उद्योग
19–श्री राधेश्याम गुप्ता	संस्थागत वित्त
20–श्री बाबू राम, एम०काम०	लघु उद्योग, निर्यात प्रोत्साहन ।
21–श्री हुकुम सिंह	पंजीयन, मनोरंजन कर, स्टाम्प एवं न्यायालय शुल्क संसदीय कार्य ।
22–श्री ऐजाज रिज़वी	खाद्य एवं रसद
23–श्री शिव प्रताप शुक्ल	कारागार
24–श्री बच्चा पाठक	पर्यावरण, अतिरिक्त ऊर्जा ।
25–श्री वीरेन्द्र सिंह सिरोही	राजस्व
26–श्री हरिशंकर तिवारी	विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी
27–श्री मण्डलेश्वर सिंह	क्षेत्रीय विकास एवं परती भूमि विकास ।
28–श्री राजा महेन्द्र अरिदमन सिंह	राष्ट्रीय एकीकरण एवं इलेक्ट्रानिक्स ।
29–डा० रमेश पोखरियाल "निशंक"	उत्तरांचल विकास
30–श्री चौधरी लक्ष्मीनारायण	उद्यान
31–श्री श्याम सुन्दर शर्मा	खेलकूद, युवा कल्याण प्रान्तीय विकास दल ।
32–श्री शिवाकान्त ओझा	चिकित्सा शिक्षा
33–श्री सरस्वती प्रताप सिंह	होमगार्ड्स, राजनैतिक पेंशन एवं नागरिक सुरक्षा ।
34–श्री फागू चौहान	संस्कृति एवं पूर्त धर्मस्व
35–श्री राजाराम पाण्डेय	खादी एवं ग्रामीण उद्योग
36–श्री राजा रघुराज प्रताप सिंह	कार्यक्रम कार्यान्वयन
37–श्री जय नारायन तिवारी	सार्वजनिक उद्यम

उत्तर प्रदेश विधान सभा

राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)

क्र०सं० नाम	कार्य [illegible] पोर्टफोलियो)
1–श्री सुन्दर सिंह बघेल	दुग्ध विकास
2–श्री रवीन्द्र शुक्ल	बेसिक शिक्षा
3–श्री गोरख प्रसाद निषाद	पशुधन
4–श्री महेन्द्र नाथ पाण्डे	नियोजन
5–श्री धर्मपाल सिंह	पंचायती राज
6–श्री जयपाल सिंह	बाढ़ नियंत्रण
7–श्री देवेन्द्र सिंह उर्फ भोले सिंह	परिवार कल्याण, मातृ एवं शिशु कल्याण।
8–श्री अशोक यादव	अभाव तथा सहायता एवं पुनर्वास।
9–श्री राधेश्याम कोरी	अम्बेडकर ग्राम विकास एवं सेवायोजन।
10–श्री राजा गजनफर अली	अल्पसंख्यक कल्याण, मुस्लिम वक्फ एवं हज।

राज्य मंत्री

क्र०सं० नाम	विभाग या विषय
1–श्री बालेश्वर त्यागी	वित्त
2–श्री फतेह बहादुर सिंह	औद्योगिक विकास
3–श्री सुखपाल पाण्डेय	परिवहन
4–श्री राम प्रसाद कमल	लोक निर्माण
5–श्री लल्लू सिंह चौहान	पर्यटन
6–श्री सुरेश खन्ना	आवास
7–श्री सतीश महाना	नगर विकास
8–श्री धनराज यादव	सिंचाई
9–श्री मंगल सिंह सैनी	गन्ना विकास एवं चीनी मिलें
10–श्री दल बहादुर कोरी	समाज कल्याण
11–श्री राम आसरे कुशवाहा	अनुसूचित जाति/ जनजाति कल्याण
12–श्री रंगनाथ मिश्र	ऊर्जा
13–श्री भगवान सिंह शाक्य	कृषि

उत्तर प्रदेश विधान सभा

क्र०सं० नाम	विभाग या विषय
14–श्री वीरेन्द्र सिंह	कृषि शिक्षा एवं कृषि अनुसंधान
15–श्री राकेश धर त्रिपाठी	उच्च शिक्षा
16–श्री यशवन्त सिंह	प्राविधिक शिक्षा
17–श्री शिवेन्द्र सिंह	ग्राम्य विकास
18–श्री बंश नारायण सिंह पटेल	ग्राम्य विकास
19–डा० अरविन्द कुमार जैन	चिकित्सा एवं स्वास्थ्य
20–श्री राम आसरे पासवान	लघु सिंचाई
21–श्री चन्द्र किशोर	माध्यमिक शिक्षा
22–श्री विक्रमाजीत मौर्य	आबकारी
23–श्री रामचन्द्र बाल्मीकि	सहकारिता
24–श्रीमती गुलाब देवी	महिला कल्याण
25–श्री प्रेम प्रकाश सिंह	वस्त्रोद्योग
26–श्री बहोरन लाल मौर्य	संस्थागत वित्त
27–श्री बिहारी लाल आर्य	लघु उद्योग
28–श्री राकेश त्यागी	पंजीयन
29–श्री हरि नारायण राजभर	कारागार
30–श्री विवेक कुमार सिंह	पर्यावरण
31–श्री रामपाल राजवंशी	अतिरिक्त ऊर्जा
32–श्री शिव शंकर सिंह	राजस्व
33–श्री सतीश शर्मा	विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी
34–श्री संग्राम सिंह	क्षेत्रीय विकास
35–श्री श्रीराम सोनकर	राष्ट्रीय एकीकरण
36–श्री मातवर सिंह कण्डारी	उत्तरांचल विकास
37–श्री बंशीधर भगत	उत्तरांचल विकास
38–श्री नारायण रामदास	उत्तरांचल विकास
39–श्री दलवीर सिंह	खेलकूद
40–श्री अमर मणि त्रिपाठी	युवा कल्याण
41–श्री गंगा बख्श सिंह	चिकित्सा शिक्षा
42–श्री विनय कुमार पाण्डेय "बिन्नू"	होमगार्ड्स
43–श्री जितेन्द्र कुमार जायसवाल	संस्कृति
44–श्री रामलखन पासी	खादी एवं ग्रामीण उद्योग
45–श्री मुन्ना लाल मौर्य	उद्यान
46–श्री वेद प्रकाश	श्रम
47–श्री राजेन्द्र सिंह पटेल	ग्रामीण अभियंत्रण
48–श्री शिव गणेश लोधी	खाद्य एवं रसद

नेता, विरोधी दल
श्री धनी राम वर्मा

उत्तर प्रदेश विधान सभा

उत्तर प्रदेश विधान सभा

(तेरहवीं विधान सभा)

गुरुवार, दिनांक 18 जून, 1998

निम्नांकित सदस्यों के अतिरिक्त अन्य सभी सदस्य उपस्थित थे :-

अजय प्रताप सिंह उर्फ लल्ला भइयां, श्री	गोण्डा
अतीक अहमद, श्री	इलाहाबाद
अनिल कुमार, श्री	बलिया
अनीस खां, श्री	पीलीभीत
अमर मणि, श्री	महराजगंज
अम्मार रिजवी, डा०	सीतापुर
अशफाक अहमद, श्री	बरेली
अशोक यादव, श्री	फिरोजाबाद
केदार सिंह फोनिया, श्री	चमोली
चन्द्रेश पासवान, श्री	गोरखपुर
जय नारायन तिवारी, श्री	सुल्तानपुर
जय प्रकाश निषाद, श्री	देवरिया
जितेन्द्र कुमार जायसवाल उर्फ पप्पू भइया, श्री	गोरखपुर
दलवीर सिंह, श्री	अलीगढ
दिवाकर विक्रम सिंह, श्री	सिद्धार्थनगर
देवेन्द्र सिंह उर्फ भोले सिंह, श्री	कानपुर देहात
धनराज यादव, श्री	सिद्धार्थनगर
नरेन्द्र कुमार सिंह गौर, डा०	इलाहाबाद
नरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री	हरदोई
नारायण राम दास, श्री	अल्मोड़ा
"पटेल" राम कुमार वर्मा, श्री	खीरी
परवेज हलीम खां, श्री	मेरठ
फतेह बहादुर, श्री	महराजगंज
फागू, श्री	मऊ
वंश नारायण सिंह, श्री	भदोही
बंशीधर भगत, श्री	नैनीताल
बादशाह सिंह, श्री	हमीरपुर
बाबू लाल, श्री	उन्नाव
बालेश्वर त्यागी, श्री	गाजियाबाद
मातवर सिंह काण्डारी, श्री	टिहरी गढ़वाल
मुख्तार अनीस, श्री	मऊ
रंगनाथ मिश्र, श्री	भदोही
रघुराज प्रताप सिंह "राजा भईया", कुंवर	प्रतापगढ़
रमेश पोखरियाल "निशंक", डा०	गढ़वाल
रवीन्द्र प्रताप चौधरी, श्री	सिद्धार्थनगर
रवीन्द्र शुक्ला, श्री	झांसी
राजा राम पाण्डेय, श्री	प्रतापगढ़
राजेन्द्र सिंह पटेल, श्री	फतेहपुर
राम अचल राजभर, श्री	अम्बेडकर नगर
श्री राम आसरे पासवान, श्री	बस्ती,
राम आसरे सिंह कुशवाहा, डा०	कानपुर नगर
रामनाथ, श्री	प्रतापगढ़
राम लखन, श्री	सुल्तानपुर
लक्ष्मी नारायण चौधरी, श्री	मथुरा
लवकुश कुमार, श्री	बिजनौर
लालजी टण्डन, श्री	लखनऊ
विरेन्द्र सिंह सिरोही, श्री	बुलन्दशहर
वेद प्रकाश, श्री	बस्ती
शरदवीर सिंह, श्री	शाहजहांपुर
शिव प्रताप शुक्ल, श्री	गोरखपुर
शिवेन्द्र सिंह उर्फ शिव बाबू, श्री	महराजगंज
श्रीराम, श्री	मऊ
संग्राम सिंह, श्री	बाराबंकी
सिंहासन सिंह, श्री	गाजीपुर
सूर्य प्रताप शाही, श्री	देवरिया
हरिनारायण, श्री	बलिया
हरि शंकर तिवारी, श्री	गोरखपुर

उत्तर प्रदेश विधान सभा

उत्तर प्रदेश विधान सभा के पदाधिकारी

तथा अधिष्ठाता मण्डल

अध्यक्ष,

श्री केशरी नाथ त्रिपाठी

उपाध्यक्ष,

रिक्त

सचिव,

श्री प्रेम चन्द्र सक्सेना,

अधिष्ठाता मण्डल

1–डा० सरजीतसिंह डंग, सदस्य, विधान सभा (मिर्जापुर)

2–श्री बाल चन्द्र मिश्र, सदस्य, विधान सभा (कानपुर-नगर)

3–श्री निर्भय पाल शर्मा, सदस्य, विधान सभा (सहारनपुर)

4–श्री केदार सिंह फोनिया, सदस्य, विधान सभा (चमोली)

5–श्री लालजी वर्मा, सदस्य विधान सभा (अम्बेडकर नगर)

6–डा० अशोक बाजपेयी, सदस्य, विधान सभा (हरदोई)

7–श्री मुन्ना चौहान, सदस्य, विधान सभा (देहरादून)

8–श्री गौरी शंकर एडवोकेट, सदस्य, विधान सभा (लखनऊ)

9–डा० अम्मार रिजवी, सदस्य, विधान सभा (सीतापुर)

10–श्री कौकब हमीद, सदस्य, विधान सभा (मेरठ)

उत्तर प्रदेश विधान सभा

उत्तर प्रदेश विधान सभा

गुरुवार, दिनांक 18 जून, 1998

(विधान सभा की बैठक सभा मण्डप लखनऊ में दिन के 11 बजे अध्यक्ष, श्री केशरी नाथ त्रिपाठी की अध्यक्षता में आरम्भ हुई ।)

राष्ट्रीय-गीत

श्री अध्यक्ष–

विधान सभा के इस बजट सत्र में आप सभी माननीय सदस्यों का स्वागत है । आज की कार्यवाही का आरम्भ हम वन्दे मातरम् से करेंगे । सभी माननीय सदस्यों से अनुरोध है कि खड़े होकर वन्दे मातरम् करें ।

वन्दे मातरम् । वन्दे मातरम् ॥
सुजलाम् ।
सुफलाम् ।
मलयज शीतलाम् ।
शस्य श्यामलाम् ।
मातरम् । वन्दे मातरम् ॥
शुभ्र-ज्योत्सना-पुलकित-यामिनीम्
फुल्ल-कुसुमित-द्रुमदल-शोभिनीम्
सुहासिनीम्
सुमधुर भाषिणीम्
सुखदाम्
वरदाम्
मातरम् । वन्दे मातरम् ॥

कृपया अपना स्थान ग्रहण करें ।

उत्तर प्रदेश विधान सभा

वर्तमान विधान सभा के सदस्य श्री सत्य प्रकाश विकल के निधन पर शोकोद्गार

* मुख्य मंत्री (श्री कल्याण सिंह)–

श्रीमन्, बड़े गहरे दुख के साथ और बड़े भारी मन से मैं यह सूचित कर रहा हूं कि इस माननीय सदन के वर्तमान सदस्य माननीय श्री सत्य प्रकाश विकल जी हमारे बीच में नहीं रहे । उनका निधन 2 जून, 1998 को हो गया । आगरा में वे जन्मे थे । 71 वर्ष की आयु उनकी हो चुकी थी । 1927 में दो नवम्बर को आगरा मैं उन्होंने जन्म लिया था । इस माननीय सदन के पांच बार सदस्य निर्वाचित होकर आये थे । 1985 से 1989, 1991, 1993, 1996 में । 1952 में वह राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से जुड़े थे अपनी योग्यता, अपनी कर्मठता और अपनी कार्यकुशलता के कारण जनसंघ और उसके बाद भारतीय जनता पार्टी के अन्तर्गत महत्वपूर्ण और उत्तरदायित्वपूर्ण पदों पर उन्होंने काम किया । उत्तर प्रदेश के मंत्री रहे और विधान सभा की अनेक समितियों के सदस्य थे जहां पर उन्होंने अपने बहुमूल्य सुझावों से प्रदेश की जनता की सेवा की । भारतीय जनता पार्टी विधान मंडल दल में उप नेता, मुख्य सचेतक और कोषाध्यक्ष जैसे महत्वपूर्ण पदों के दायित्व का सफलतापूर्वक निर्वहन किया । हम सभी जानते हैं श्री सत्य प्रकाश विकल जी सहृदय व्यक्ति थे, व्यवहार कुशल व्यक्ति थे, मृदुभाषी व्यक्ति थे और सच तो यह है कि वह अजातशत्रु थे । हमने कभी उनको आवेश में नहीं देखा । कभी भी हमने उनको क्रोध में आते नहीं देखा कभी भी उनके मुख से किसी की आलोचना, किसी की बुराई नहीं सुनी । इस प्रकार के बहुआयामी व्यक्तित्व के लोग कम होते हैं । समाज सेवा में, राजनीति के माध्यम से देश सेवा में उनकी विशेष अभिरुचि थी । उनके उठ जाने से पूरे प्रदेश ने एक कुशल राजनेता खो दिया । निस्वार्थ भाव से समाज की सेवा करने वाले एक उच्च कोटि के कार्यकर्ता को खो दिया । मैं सम्पूर्ण सदन की ओर से उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि उनकी दिवंगत आत्मा को शान्ति दें सदगति दे, न केवल उनके परिवार को बल्कि हम सबको । उनका परिवार बृहद था । इस शोक-संतप्त परिवार के सभी जनों को इस गहरे आघात को सहने की क्षमता दे, धैर्य दे और साहस प्रदान करे । श्रीमन् आपसे प्रार्थना है कि हमारी शोक-संवेदनायें उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें ।

नेता विरोधी दल (श्री धनीराम वर्मा)–

श्रीमन्, आज हम अपने एक ऐसे साथी के प्रति शोक-संवेदना व्यक्त करने के लिये खड़े हुए हैं जो अभी पिछले सदन में, जो इसके पहले सदन की बैठक हुई थी हमारे साथ यहां पर सदन में उपस्थित रहे और इसके पूर्व भी इस सदन के पांच बार माननीय सदस्य रहे । उन्होंने अपने जीवन में समाज सेवा को ही मुख्य स्थान दिया और इसी लिये वह पांच बार इस सदन के सदस्य चुने गये । इतना ही नहीं वह कई समितियों के सदस्य और सभापति भी रहे तथा अपने मूल्यवान विचारों से समितियों को लाभान्वित किया । उनके बारे में मैं ही नहीं सारा सदन यही कहेगा कि वह बहुत ही सरल स्वभाव के शान्तिप्रिय और समाजसेवी व्यक्ति थे । जब कोई ऐसा व्यक्ति हमारे समाज से अलग हो जाता है और जुदा होकर पंच तत्व में विलीन होता है तो निश्चित रूप से उनके परिवारी जन जो ज्यादा नजदीक होते हैं उन्हें कष्ट होता है । इसीलिये यह स्वाभाविक है कि वह इस सदन के सदस्य तो थे ही साथ ही साथ हम लोगों के बहुत ही निकट के संबंधी थे इसलिये हम सब इस सदन के माननीय सदस्यगण उनके निधन पर बहुत

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

दुखी हैं और परमपिता परमात्मा से यह निवेदन करते हैं कि उनकी आत्मा को शाश्वत् शान्ति दे । हम सब परिवार जनों को उनके घर के परिवारजनों सहित जो अब शोक-संतप्त हैं उन्हें शान्ति प्रदान करें और इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपने श्रद्धा सुमन उनके प्रति अर्पित करता हूं और आपसे निवेदन करता हूं कि हमारे शोक संदेश उनके परिवारजनों तक पहुंचाने की कृपा करें ।

*श्री स्वामी प्रसाद मौर्य–

माननीय अध्यक्ष जी यह बहुत ही दुख की घड़ी है कि इस समय हमारे बीच में वरिष्ठ माननीय सदस्य श्री विकल जी नहीं रहे । जैसी कि उनकी कार्य शैली, सामाजिक जीवन और लोगों से लगाव था वह इस बात को जाहिर करता है कि विकल जी ने एक बार नहीं बल्कि पांच बार माननीय सदस्य के रूप में इस विधान सभा की गरिमा को बढ़ाने का काम किया । साथ ही साथ जनसेवा का कार्य किया और वह कट्टर हिन्दूवादी होते हुए भी किसी भी जाति धर्म और मजहब के लोगों से मिलने-जुलने में उनकी जो सहिष्णुता थी वह माननीय विकल जी की उदारता को जाहिर करती है । स्वाभाविक है कि ऐसे मिलनसार वरिष्ठ साथी हमारे बीच में नहीं रहे हैं । तो हम सभी उनके अभाव में दुखी हैं । बहुजन समाज पार्टी के सभी माननीय सदस्यों की ओर से मैं माननीय विकल जी के निधन पर शोक-संवेदना व्यक्त करता हूं और आपसे अनुरोध करता हूं कि हमारी शोक-संवेदना उनके परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें ।

लघु सिंचाई, ग्रामीण अभियंत्रण मंत्री (श्री मारकण्डेय चन्द)–

अध्यक्ष जी, माननीय नेता सदन, नेता विरोधी दल एवं नेता बहुजन समाज पार्टी ने इस विधान सभा के वर्तमान सदस्य श्री सत्य प्रकाश विकल जी के संबंध में जो भावनायें व्यक्त की हैं उससे मैं अपने तथा अपने दल को सम्बद्ध करता हूं । स्वर्गीय विकल जी इस सम्मानित विधान सभा के पांच बार सदस्य रहे हैं। मुझे यह सौभाग्य मिला है कि मैं उनके साथ चार बार सदस्य के रूप में रहकर उन्हें निकट से देखने और परखने का मौका मिला है । माननीय विकल जी अत्यन्त सरल स्वभाव के व्यक्ति थे । 1991-92 की सरकार में वह आबकारी मंत्री रहे थे । मुझे इतना स्मरण है कि इस विधान सभा की कार्यवाही में स्वर्गीय विकल जी अनेक अवसरों पर अपने तार्किक प्रकरणों से विधान सभा का ध्यान आकृष्ट करते थे और अत्यन्त सारगर्भित सुझाव देकर लोगों को प्रेरित करते थे कि उनकी बातों को बड़े आदर के साथ सुना जाये । माननीय विकल जी भारतीय जनता पार्टी के लगातार एक सुयोग्य, कर्मठ पदाधिकारी रहे हैं । स्वर्गीय विकल जी के निधन से भारतीय जनता पार्टी और विशेषकर आगरा जनपद की जो क्षति हुई है वह अपूर्णीय है । मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनके दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करे तथा उनके शोक-संतप्त परिवार को धैर्य दे कि वह इस असह्य दुःख को सहन कर सकें । मान्यवर, मैं अपने तथा अपने दल की ओर से शोक-संवेदना व्यक्त करता हूं, आपसे अनुरोध है कि मेरा तथा मेरे दल की शोक-संवेदनायें उनके परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें ।

(माननीय नेता लोकतांत्रिक कांग्रेस एवं भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का नाम पुकारे जाने तथा उनके अनुपस्थित होने पर)

* श्री कौकब हमीद–

मान्यवर, श्री सत्य प्रकाश विकल जी जो इस सदन के पांच बार सदस्य रहे उनको मैं व्यक्तिगत तौर पर जानता था। मैंने हमेशा देखा कि अगर कोई उनसे राय लेने जाता था तो बहुत अच्छी राय दिया करते थे। हम लोगों को बताया करते थे। उनके न रहने से सिर्फ उनके दल को ही नुकसान नहीं हुआ है, बल्कि इस पूरे सदन में एक नेक आदमी बीच से उठ गया है। मैं अपने दल की तरफ से और अपनी तरफ से आपसे गुजारिश करूंगा कि उनके शोक-संतप्त परिवार तक हमारी संवेदनायें पहुंचाने की कृपा करें।

श्री सुबाष चन्द्र श्रीवास्तव–

माननीय अध्यक्ष महोदय, आज यह अत्यन्त दुख की घड़ी है, जब इस माननीय सदन के वर्तमान सदस्य श्री सत्य प्रकाश विकल जी हम लोगों के बीच में नहीं रहे हैं। स्वर्गीय विकल जी के संबंध में, उनकी शख्शियत के बारे में माननीय नेता सदन, माननीय नेता विपक्ष एवं अन्य दलों के माननीय नेताओं के व्यक्त विचारों से मैं अपने को सम्बद्ध करता हूं। माननीय विकल जी इस सम्मानित सदन के पांच बार सदस्य रहे और प्रदेश के गरीबों, मजलूमों, किसानों, मजदूरों की समस्याओं के समाधान की दिशा में अपूर्व योगदान दिया। आज की पीढ़ी के लिये विकल जी का व्यक्तित्व, जहां चतुर्दिक राजनीति में मूल्यों का क्षरण हो रहा है, आज की पीढ़ी को निरन्तर प्रेरणा देता रहेगा। माननीय विकल जी के निधन पर मैं अपने दल की ओर से शोक-संवेदना व्यक्त करता हूं और आपसे निवेदन करता हूं कि हमारी और हमारी पार्टी की ओर व्यक्त संवेदना को उनके शोक-संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

वन मंत्री (श्री रघुवर दयाल वर्मा)–

मान्यवर, श्री सत्य प्रकाश विकल का लम्बी बीमारी के बाद निधन हो गया। उनके निधन से आगरा जनपद में, पूरे मण्डल में जो स्थिति पैदा हो गयी है, और जो रिक्तता पैदा हो गयी है, वह अपूर्णनीय है। मेरा विकल जी से बहुत निकट का सम्बन्ध रहा है, हम दोनों राजनीति में एक ही समय पर संग-संग आये थे, वह भारतीय जनसंघ के रूप में काम करते थे और हम सोशलिस्ट पार्टी के रूप में काम करते थे, लेकिन हमारा आपस में अत्यन्त निकट का रिश्ता था। मैंने विकल जी को कभी क्रोध करते नहीं देखा, कभी किसी की बुराई नहीं करते देखा। राजनीतिक मंचों पर हम लोग अलग-अलग भाषण करते थे, लेकिन वह किसी व्यक्ति विशेष की आलोचना किसी को अपमानित करने के लिये कोई शब्द नहीं कहे। श्रीमन्, वह बहुत सरल स्वभाव के थे, मृदुभाषी थे। भिन्न-भिन्न राजनीतिक दलों में रहते हुए आगरा में सामंजस्य के रूप में कभी भी हम उनके पास जाते थे, तो विकल जी का पूरा सहयोग मिलता था और वह कहते थे कि हम इस तरह से संयुक्त आन्दोलन छेड़ सकते हैं। विकल जी का अविस्मरणीय सहयोग रहा है जिसके लिये हम लोग उन्हें हमेशा याद करते रहेंगे। आगरा के विकास के लिये, राजनीतिक लोगों में आपसी प्रतिद्वन्दिता के साथ सामंजस्य बैठाने में, एक दूसरे के प्रति प्रेम का भाव प्रदर्शित करने में उन्होंने अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है, उसके लिये वह हमेशा याद किये जाते रहेंगे। हमारे दल की तरफ से उनके शोक-संतप्त परिवार को हमारी संवेदनायें पहुंचाने की आप कृपा करें।

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

श्री अध्यक्ष–

वर्तमान विधान सभा में आगरा पूर्व विधान सभा क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करने वाले माननीय सत्य प्रकाश विकल जी का निधन 2 जून, 1998 को हुआ । उन्होंने पांच बार विधान सभा का सदस्य निर्वाचित होने के पश्चात् इस सदन की सेवा की । श्री विकल जी को मैंने एक शुभ चिन्तक के रूप में, राजनैतिक दल के पदाधिकारी और नेता के रूप में, मंत्री के रूप में, इस सदन के सदस्य के रूप में, विभिन्न समितियों के सदस्य के रूप में कार्य करते हुए देखा है और बड़े विश्वास के साथ यह कह सकता हूं कि उन्होंने जिस प्रकार इस सदन की सेवा की है वह स्वयं एक स्मरणीय बात रहेगी । श्री विकल जी को मैं व्यक्तिगत रूप से भी बहुत अच्छी तरह से जानता था । अनेक बार मैंने देखा कि लोगों से विचार वैभिन्न होने के पश्चात् भी उनके मन में किसी के प्रति दुर्भावना नहीं आयी, सद्भाव की कमी हमें कभी नहीं दिखाई पड़ी । अभी कुछ माह पूर्व इस विधान सभा में मतदान हुआ था तो वह अस्वस्थ थे और स्ट्रेचर पर लाये गये थे । हम लोगों ने इस दिन मन ही मन ईश्वर से कामना की थी कि ईश्वर उनको जल्द से जल्द स्वस्थ करे पर विधाता को कुछ और ही मंजूर था, आज विकल जी हमारे बीच में नहीं हैं । माननीय मुख्य मंत्री, माननीय नेता, विरोधी दल और विभिन्न अन्य राजनीतिक दल के नेताओं ने जो शोकोद्गार व्यक्त किये हैं, मैं उनसे अपने को सम्बद्ध करता हूं । आप सभी की भावनाओं को मैं उनके शोकाकुल परिवार तक पहुंचा दूंगा । ईश्वर उनके परिवार को इस महान क्षति और दुख को सहन करने की शक्ति दे । हम सभी उनकी आत्मा की शान्ति के लिये दो मिनट खड़े होकर मौन धारण करें ।

(दिवंगत आत्मा की शांति के लिये सभी सदस्य दो मिनट मौन खड़े हुए)

विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य श्री गौरी शंकर भइया, श्री विचित्र नारायण शर्मा, श्री विश्वम्भर नाथ पाण्डेय तथा श्री बाबू लाल गोयल के निधन पर शोकोद्गार

मुख्य मंत्री (श्री कल्याण सिंह)–

श्रीमन्, इस सम्मानित सदन के भूतपूर्व सदस्य माननीय श्री गौरी शंकर भइया हमारे बीच में नहीं रहे । काल के क्रूर हाथों ने उनको हमसे छीन लिया । उनका निधन 48 वर्ष की आयु में 28 मई, 1998 को बलिया में एक छत से गिर जाने से हो गया । उनका जन्म 1 (एक) जून, 1950 में जनपद बलिया में हुआ था । इस माननीय सदन के वह भी 4 बार सदस्य रहे । 1977, 1980, 1985 और 1989 में इस सदन के अन्दर वह निर्वाचित होकर आये । यह उनकी संघर्षशीलता और लोकप्रियता का ही परिणाम था कि चार-चार बार इस माननीय सदन के सदस्य के रूप में निर्वाचित होकर आये । उन्होंने जेल की यात्राएं सहीं, कई बार अनेक राजनीतिक कारणों से वह जेल गये । विधान सभा की कई महत्वपूर्ण समितियों के वह सदस्य रहे और उत्तर प्रदेश की सरकार में उन्होंने मंत्री पद का भार बड़ी योग्यता के साथ निभाया । वह एक संघर्षशील व्यक्ति थे । अन्याय के विरुद्ध उन्होंने सदैव संघर्ष किया । विशेष रूप से किसानों के हितों की लड़ाई, मजदूरों के हितों की लड़ाई वह हमेशा लड़ते रहे । वह एक दृढ़ निश्चय वाले व्यक्ति थे । एक ओर उनके स्वभाव में संघर्ष था

तो दूसरी ओर उनके स्व॰ में बहुत ही अनुकरणीय मिलनसारिता भी थी, ऐसा अच्छा सुयोग्य था कि वह सबके लिये प्रिय बने रहे । मैंने अनेकों बार उन्हें इस सदन में अपनी बात कहते सुना, हर बात को अपने तर्कों के साथ और शालीनता के साथ रखने की उनमें कला थी । उनके निधन से बलिया जनपद ने एक कुशल राजनेता खो दिया, एक निस्वार्थ भाव से कार्य करने वाला समाजसेवी खो दिया, किसान–मजदूर ने अपना हितैषी खो दिया । मैं इस दुखद अवसर पर अपनी ओर से और सम्पूर्ण माननीय सदन की ओर से शोक-संवेदना व्यक्त करता हूं और परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि उनकी दिवंगत आत्मा को शांति दे, सद्गति दे और उनके शोक-संतप्त परिवार को इस गहरे दुख को सहने की शक्ति और धैर्य प्रदान करे । मान्यवर, हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि उनके शोक-संतप्त परिवार तक हमारी शोक-संवेदनायें पहुंचाने की कृपा करें ।

श्रीमन्, इसी सदन के भूतपूर्व सदस्य श्री विचित्र नारायण शर्मा जी भी हमारे बीच में नहीं रहे । उनका निधन 31 मई को हो गया और एक प्रकार से उस सूक्ति को चरितार्थ किया :–

"जीवेम शरदः शतम् ।"

वे 101 वर्ष की आयु प्राप्त करने के बाद इस संसार से विदा हुए हैं । देहरादून में 10 मई, 1898 को उनका जन्म हुआ था । तीन बार वे इस माननीय सदन के सदस्य रहे । 1952, 1957 और 1962 में । 1947 से 1952 तक वे उत्तर प्रदेश की विधान परिषद् के भी सदस्य रहे । वे एक महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे । यह उस पीढ़ी के व्यक्ति थे जिस पीढ़ी ने देश की आजादी की लड़ाई में अपना सब कुछ होम कर दिया । उस पीढ़ी के प्रति यह देश सदा ऋणी रहेगा । उन्होंने गांधी आश्रम की नींव डाली। उन्हीं के प्रयत्नों से 1928 में गांधी आश्रम एक पंजीकृत संस्था बनी । वे उ० प्र० सरकार में कई बार मंत्री रहे और मंत्री पद पर रहते हुए उन्होंने अपने गुरुतर दायित्व का बड़ा सफलतापूर्वक निर्वहन किया । उत्तर प्रदेश विधान सभा में उन्हें 1992 में सम्मानित भी किया गया था । श्री विचित्र नारायण शर्मा जी के निधन से केवल प्रदेश ने ही नहीं बल्कि देश ने एक अदम्य साहस वाला स्वतंत्रता संग्राम सेनानी खो दिया, एक कुशल राजनीतिज्ञ खो दिया, स्वदेशी आन्दोलन में अग्रणी भूमिका निभाने वाला एक महान नेता खो दिया । श्रीमन्, मैं अपनी ओर से और सम्पूर्ण माननीय सदन की ओर से आदरणीय श्री विचित्र नारायण शर्मा जी के प्रति पूरे सम्मान के साथ, पूरी श्रद्धा के साथ नमन करता हूं और अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि उनकी दिवंगत आत्मा को शांति दे, सद्गति दे और उनके शोक-संतप्त परिवार को इस दुख को सहने करने की क्षमता और धैर्य प्रदान करे । श्रीमन्, आपसे मेरी प्रार्थना है कि हमारे यह शोकोद्गार, शोक-संवेदना, उनके शोक-संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें ।

इस सदन के एक और भूतपूर्व सदस्य माननीय श्री विश्वम्भर नाथ पाण्डेय जी भी आज हमारे बीच में नहीं रहे । वह भी उस पीढ़ी के थे जिस पीढ़ी के स्व० श्री विचित्र नारायण शर्मा जी थे । 92 वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया । श्री पाण्डेय जी का जन्म 23 दिसम्बर, 1906 में हुआ था । 1952 में वह इस विधान सभा के सदस्य रहे और 1972 से 74 तक वह उत्तर प्रदेश विधान परिषद् के सदस्य निर्वाचित हुए तथा 1976 और 1990 के मध्य वह राज्य सभा के सदस्य रहे । वह एक महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे । उनका बहुत का निकट का संबंध राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी से तथा इस देश के महान नेता पं० जवाहर लाल नेहरू जी के साथ रहा था । 1981 में वह उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष रहे तथा 1983 से 1988 तक वह उड़ीसा के राज्यपाल रहे । वर्ष 1976 में उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया गया था और 1992 में उत्तर प्रदेश विधान सभा ने भी उन्हें सम्मानित किया उनके

निधन से देश में एक महान स्वतंत्रता सेनानी खो दिया है । मैं अपनी ओर से, सम्पूर्ण सदन की ओर से उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि उनकी दिवंगत आत्मा को शांति और सद्गति प्रदान करे और शोकाकुल परिवार को इस गहरे आघात को सहने की क्षमता और धैर्य प्रदान करे तथा साथ ही आप से भी प्रार्थना करता हूं कि हमारी ये शोक-संवेदनायें उनके परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें ।

मान्यवर, एक और भूतपूर्व सदस्य श्री बाबू लाल गोयल भी हमारे बीच में नहीं रहे । उनका निधन 10 जून, 1998 को आगरा में हो गया था । वे 77 वर्ष के थे । 2 जनवरी, 1921 को आगरा में उनका जन्म हुआ और 1991 के मध्यावधि चुनाव में वह इस सदन के सदस्य निर्वाचित हुए थे । बड़े प्रसिद्ध समाजसेवी थे, कई शिक्षण संस्थाओं से उनका बड़ा गहरा लगाव था, जमीन की राजनीति करने वाले थे, अपने क्षेत्र में बहुत लोकप्रिय थे, व्यवहार कुशल थे और मृदुभाषी थे । आज एक ऐसे नेता को खोकर समाज को भारी क्षति हुई है । मैं उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि उनकी दिवंगत आत्मा को शांति और सद्गति दे तथा उनके शोकाकुल परिवार को इस गहरे दुःख को सहने की क्षमता दे और साथ ही आपसे भी प्रार्थना है कि उनके शोकाकुल परिवार तक हमारी ये शोक-संवेदनायें पहुंचाने की कृपा करें ।

* नेता, विरोधी दल (श्री धनीराम वर्मा)–

श्रीमन्, मैं माननीय नेता सदन के विचारों से अपने को सम्बद्ध करते हुए आगे की कड़ी में कहना चाहता हूं कि श्री गौरी भइया जिनका पूरा नाम श्री गौरी शंकर भइया था परन्तु वह इस सदन के अन्दर व बाहर गौरी भइया के नाम से ही जाने जाते थे, हमारे साथ कई बार इस सदन के सदस्य रहे । बड़े संघर्षशील, विवेकशील और विधान सभा की कार्यवाही में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे हैं ।

वह अल्प आयु में ही हमसे विदा हो गये और एक दुर्घटना के तहत स्वर्गवासी हुए । यदि वह हमारे बीच में आज होते तो निश्चित रूप से इस सदन, समाज, प्रदेश को बहुत कुछ अपने मूल्यवान विचार देते और समाज को लाभान्वित करते । लेकिन विधाता को शायद यह मंजूर नहीं था और वह हमसे अलग हो गये । लेकिन जो विचार उन्होंने छोड़े हैं, जो कार्य उन्होंने किये हैं वह हमेशा बलिया जनपद और प्रदेश याद करता रहेगा । वे इस माननीय सदन के पांच-बार सदस्य रहे । इससे यह साबित होता है और स्वयं सिद्ध है कि वे एक लोकप्रिय नेता थे और खासतौर से किसानों और मजदूरों के नेता थे । उनकी लड़ाई के लिए उन्होंने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया, उनकी समस्याओं को अपनी समस्या समझकर उनके निराकरण में सदैव प्रत्यनशील रहते थे । निश्चित ही उनके निधन से हमारा प्रदेश उनके अमूल्य सुझावों से वंचित रहेगा और सारे बलिया जनपद और प्रदेश को उनकी सेवाओं से वंचित रहना पड़ेगा । श्रीमन्, मैं अपनी ओर से, अपने दल और इस माननीय सदन की ओर से ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनकी दिवंगत आत्मा को शास्वत शांति प्रदान करे और उनके परिवारीजन को धैर्य धारण करने की क्षमता प्रदान करे । इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपने शोकोद्गार अर्पित करते हुए आपसे निवेदन करना चाहूंगा कि उनके शोक-संतप्त परिवार तक हमारी यह शोक-संवेदनाएं पहुंचाने का कष्ट करें । श्रीमन्, दूसरे माननीय सदस्य, स्व० श्री विचित्र नारायण शर्मा जो आज हमारे बीच में नहीं हैं वे भी इस माननीय सदन के चार बार सदस्य रहे और एक बार विधान परिषद् के सदस्य रहे । विधान सभा और विधान

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

परिषद् को अपने अमूल्य सुझावों से लाभान्वित करते रहे और साथ ही साथ मंत्री पद पर रहकर प्रदेश को एक दिशा निर्देशन देते रहे । उन्होंने बचपन से ही देश की आजादी में हिस्सा बढ़-चढ़कर लिया और कई बार वह जेल भी गये और उनकी त्याग और तपस्या से हमारा देश और प्रदेश लाभान्वित हुआ, आजादी मिली । आजादी मिलने के पश्चात् उन्होंने समाज और विधान सभा को अपने बहुत से अमूल्य सुझाव दिये । मैं यहां पर यह निश्चित तौर से कह देना चाहता हूं कि ऐसा त्यागी और तपस्वी व्यक्ति यदि हमारे समाज में उभरकर सामने नहीं आया होता और इस देश में पैदा न हुआ होता तो निश्चित तौर से हम गुलामी की जंजीरों में जकड़े रहते और आजादी हमको नहीं मिलती ।

मैं यहां पर यह कह देना चाहता हूं कि उनका त्याग, तपस्या और बलिदान भावी पीढ़ी को नई दिशा देती रहेगी और भावी पीढ़ी उनके पद चिन्हों पर चल कर आगे बढ़-बढ़ कर हिस्सा लेती रहेगी । इन्हीं शब्दों के साथ मैं स्वर्गीय विचित्र नारायण शर्मा जी के प्रति स्वयं अपनी ओर से और अपने दल की ओर से शोक-संवेदना प्रकट करता हूं और ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि वह उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे और उनके परिवारजनों को धैर्य धारण करने की क्षमता प्रदान करे । मैं आपसे निवेदन करता हूं कि उन के परिवारजनों तक हमारी शोक-संवेदनायें भिजवाने की कृपा करें ।

दूसरे माननीय सदस्य श्री विश्वम्भर नाथ जी पाण्डेय जो इस विधान सभा के एक बार सदस्य रहे और विधान परिषद् के एक बार सदस्य रहे और तीन बार राज्य सभा के सदस्य रहे हमारे बीच में नहीं रहे । इस तरह से उन्होंने देश और प्रदेश की अपने विचारों से बहुत बड़ी सेवा की । श्री विश्वम्भर नाथ पाण्डेय जी उस पीढ़ी के व्यक्ति थे, जिस पीढ़ी के स्वर्गीय गांधी जी, स्वर्गीय नेहरू जी और अन्य स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे । देश की आजादी के लिये उन्होंने सर्वस्व त्यागा और इन्हीं सेवाओं के कारण ही वह प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष रहे । दूसरे प्रदेश उड़ीसा में राज्यपाल भी रहे । इससे स्पष्ट है कि वह बहुत बड़े समाजसेवी, विद्वान और कुशल नेता थे और देश के प्रति अपने को न्योछावर कर लिया था । मैं अपनी ओर से और अपने दल की ओर से तथा समस्त सदन की ओर से उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे और साथ ही साथ यह भी चाहता हूं कि उनके शोक-संतप्त परिवारजनों को इस दुख को सहन करने का धैर्य प्रदान करे । मेरी आपसे प्रार्थना है कि मेरी शोक-संवेदनायें उनके परिवारजनों तक पहुंचाने की कृपा करें ।

श्रीमन्, अगली कड़ी में हमारे विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य रहे हैं, श्री बाबू लाल जी, वे आगरा के निवासी थे और उनका जन्म 1921 में हुआ था । वे 77 वर्ष के थे । श्री बाबू लाल जी वर्ष 1977 में इस भारतीय जनता पार्टी के टिकट पर इस विधान सभा में चुनकर आये थे और इस सदन में अपने अमूल्य सुझाव दिये, जो आज भी कार्यवाही में अंकित होंगे । उन्होंने समाज के लिये और देश के लिये और सारे विश्व को ऐसा सन्देश दिया है जो त्याग से भरा पड़ा है । उन्होंने कई मंदिरों को निःशुल्क पत्थर दिया और कई मंदिरों का जीर्णोद्धार करवाया ।

इस तरह से वह राजनीति, धर्म और समाज तीनों से जुड़े थे और इन तीनों से जुड़े रहकर उन्होंने देश और समाज की बहुत बड़ी सेवा की । इतिहास में उनका नाम स्वर्णाक्षरों में लिखा जायेगा । आने वाली पीढ़ी उनके त्याग, तपस्या और दान से शिक्षा लेगी ।

इन शब्दों के साथ मैं अपनी संवेदना और अपने दल की संवेदना सदन के माध्यम से प्रकट करता हूं और ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे और उनके परिवार को धैर्य धारण करने की क्षमता प्रदान करे । इन शब्दों के साथ श्रद्धांजलि अर्पित करते हुये आपसे निवेदन करता हूं कि उनके शोक-संतप्त परिवार तक हमारी भावना पहुंचाने की कृपा करें ।

*श्री स्वामी प्रसाद मौर्य–

मान्यवर, मैं नेता सदन एवं नेता प्रतिपक्ष की भावनाओं से अपने को सम्बद्ध करते हुये कहना चाहता हूं कि श्री गौरी शंकर भइया जो अपने कार्यों से इतने लोकप्रिय थे कि वह हम सब के बीच में भइया के नाम से जाने जाते थे, वह आज हमारे बीच नहीं रहे और बहुत ही युवा अवस्था में ही उनका निधन हो गया। वह चार बार अपनी इस छोटी आयु में इस विधान सभा में सदस्य होकर पहुंचे थे और वह अपनी बातों को सदन के अन्दर और सदन के बाहर दोनों जगह बखूबी उठाते रहे। 1977 में जे० पी० आन्दोलन में पहली बार युवा शक्ति के रूप में थोड़े से समय में ही प्रकट हुये और ख्याति प्राप्त की। वह जनसमस्याओं के लिये कई बार जेल भी गये। वह तमाम समितियों के सदस्य भी रहे और साथ ही साथ उ० प्र० सरकार में मंत्री भी रहे। आज उनका अभाव हम सब को खल रहा है। हम सब भइया जी के निधन से दुखी हैं। इस अवसर पर मैं अपनी ओर से और बहुजन समाज पार्टी की ओर से उनके प्रति शोक-संवेदना व्यक्त करता हूं और आपसे अनुरोध करता हूं कि हम सबकी भावनाओं को उनको शोक-संतप्त परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें।

इसी क्रम में हमारे दूसरे वयोवृद्ध स्वतंत्रता संग्राम सेनानी श्री विचित्र नारायण शर्मा जी जो अपनी अधिकतम आयु के दिनों का सुअवसर प्राप्त कर 101 वर्ष की लम्बी उम्र जीने के बाद हमारे बीच नहीं रहे। माननीय शर्मा जी गांधीवाद विचारक थे।

और गांधी जी के साथ रहकर छात्र जीवन से ही स्वतंत्रता संग्राम आन्दोलन में कूदे थे। आजादी की लड़ाई के लिये कई बार जेल भी गये। तीन बार माननीय सदन के सदस्य भी रहे और सन् 47-52 तक विधान परिषद् के भी सदस्य रहे तथा सबसे बड़ा योगदान शर्मा जी का गांधी जी के विचारों के होने के नाते रहा और खादी उद्योग से जुड़े रहने के नाते रहा। खादी के परिपेक्ष्य में उनके द्वारा जो किया गया योगदान है वह अविस्मरणीय है और इस परिपेक्ष्य में हम ऐसे वयोवृद्ध स्वतंत्रता संग्राम सेनानी और माननीय सदस्य के निधन पर अपनी ओर से और अपने समस्त बहुजन समाज पार्टी के माननीय सदस्यों की ओर से शोक-संवेदना व्यक्त करते हैं और आपसे अनुरोध करते हैं कि हमारी भावनाओं को श्री शर्मा जी के परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें।

मान्यवर, इसी परिपेक्ष्य में दूसरे वयोवृद्ध स्वतंत्रता संग्राम सेनानी श्री विश्वम्भर नाथ पाण्डेय जी जो इलाहाबाद के रहने वाले थे, उन्होंने सीधे नेहरू और गांधी जी के सानिध्य में सामाजिक राजनीतिक कार्यों की शुरूआत की और आजादी की लड़ाई में कई बार गांधी जी के साथ जेल भी गये और 1952 में इस माननीय सदन के सदस्य रहे, 72-74 तक विधान परिषद् के भी सदस्य के रूप में अपनी आवाज को सदन के माध्यम से उठाने का काम किया। तीन बार राज्य सभा के माननीय सदस्य रहे और 2-2 प्रदेशों में माननीय राज्यपाल के रूप में भी कार्य करने का मौका माननीय पाण्डेय जी को मिला और आज स्वाभाविक है कि ऐसे वयोवृद्ध स्वतंत्रता संग्राम सेनानी जिनका योगदान प्रदेश को ही नहीं बल्कि देश को भी मिला उनके निधन से हम सभी दुखी हैं। इस दुखद बेला पर हम अपनी ओर से, अपने बहुजन समाज पार्टी के सभी माननीय सदस्यों की ओर से शोक-संवेदना व्यक्त करते हैं और आपसे अनुरोध है कि हम सबकी भावनाओं को श्री पाण्डेय जी के परिवार तक प्रेषित करने का कष्ट करें।

मान्यवर, इसी क्रम में हमारे एक दूसरे माननीय सदस्य श्री बाबू लाल गोयल जी जो 1991 में इस माननीय विधान सभा के सदस्य के रूप में चुनकर के आये थे, आज हमारे बीच में नहीं हैं। विशेष रूप से उनके निधन से आगरा में जो अभाव वहां के लोगों में आया है वह हम सब के लिये ऐसा दुखद है। हम सभी आज उनका अभाव महसूस कर रहे हैं। ऐसी स्थिति मे हम अपने माननीय सदस्य के निधन पर अपनी ओर से और अपने सभी बहुजन समाज पार्टी के माननीय सदस्यों की ओर से शोक-संवेदना व्यक्त करते हैं और आपसे अनुरोध करते हैं कि हमारी इस शोक संवेदना को, हमारी भावनाओं को उनके परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें।

लघु सिंचाई ग्रामीण अभियन्त्रण मंत्री (श्री मारकण्डेय चन्द)–

माननीय अध्यक्ष जी, श्री गौरी शंकर भइया ने बलिया के सागर पाली गांव में 1950 में जन्म लिया था। वे एम० ए०, बी० एड० की परीक्षा पास करके सामाजिक जीवन में लग गये। लोक नायक जय प्रकाश जी के आन्दोलन में उनकी अग्रणी भूमिका रही। उसी आन्दोलन से प्रभावित होकर वे राष्ट्रीय राजनीति की धारा में प्रवेश किये। गौरी शंकर भइया का जीवन इतना सरल था कि वे लखनऊ में जब तक विधायक रहे वे अपने ही हाथ से भोजन पकाकर खाते थे। हम लोग उनके आवास रायल होटल में जाते थे तो वे अपने हाथों से चाय बनाकर पिलाते थे। हम लोग मना करते थे कि जितने विधायक होते थे सब मना करते थे लेकिन सहज भाव से जब खाना बनाते थे तो चाय अपने हाथ से बनाकर पिलाते थे। विधायक के रूप में इस सम्मानित सदन में वे अग्रणी भूमिका निभाते थे। पूर्वांचल में सरल स्वभाव के अत्यन्त कुशाग्र बुद्धि के वे नेता थे। बहुत दिनों तक श्री चन्द्र शेखर जी, भारत के भूतपूर्व प्रधान मंत्री के निकट रहे और इस विधान सभा के सदस्य न रहने पर भी उनके साथ जनप्रतिनिधि के रूप में निरन्तर जनता के बीच में रहे। माननीय मुलायम सिंह जी के मंत्रिमण्डल में भी सम्मानित मंत्रि-परिषद् के सदस्य भी थे। मान्यवर, गौरी शंकर भइया इस विधान सभा के चार बार सम्मानित सदस्य रहे और उनके व्यवहार से पूर्वांचल के विशेष रूप से जो विधायक थे प्रभावित रहे। किसी भी कार्य के लिये जब भी उनको कोई याद करता था चाहे जो भी समय हो वे चल देते थे। आज वह हमारे बीच में नहीं हैं। हम लोगों की बड़ी प्रबल इच्छा थी कि उनके अंतिम संस्कार में शामिल हों। हमारे साथियों ने बड़ा प्रयास भी किया लेकिन नहीं जा सके। इस बीच अनेक साथियों ने उनके यहां जाकर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। आज वह हमारे बीच में नहीं हैं। मान्यवर, मैं उनके प्रति अपना श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। उनके शोक-संतप्त परिवार को इस गहरे दुःख को सहन करने की शक्ति ईश्वर दे। आपसे अनुरोध है कि हमारे तथा हमारे दल की शोक संवेदनाएं उनके परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें। मान्यवर, श्री विचित्र नारायण शर्मा जी का नाम तो हमने सुना था परन्तु देखा नहीं। वे इस सदन के सम्मानित सदस्य रहे हैं अनेकों बार मंत्रि-परिषद् के सदस्य थे। उनके विषय में कहा जाता था कि वे मंत्रि-परिषद् के सदस्य के रूप में आते थे तो वे रिक्शे से आया करते थे। कहां तक सत्य है हम जानते तो नहीं हैं लेकिन लोग कहा करते थे। जो भी खादी वस्त्र का प्रेमी है, खादी वस्त्र पहनाता है, वह खादी आश्रम में जाता है, तो विचित्र नारायण शर्मा जी की उसे याद आती है। वह विचित्र भाई के नाम से जाने जाते थे। उनका स्वतंत्रता संग्राम के आन्दोलन में महत्वपूर्ण योगदान था। आज वह हमारे बीच में, 101 वर्ष की आयु में, नहीं रहे। मान्यवर, हम उनके प्रति अपने दल और अपनी ओर से अपने हृदय की गहराई से श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। मैं अपने दल तथा अपनी ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए आप से अनुरोध करता हूं कि उनके परिवार तक हमारा शोक-संवेदनायें पहुंचाने की कृपा करें।

मान्यवर, स्व० श्री विश्वम्भर नाथ पाण्डेय जी को मुझे नजदीक से देखने का अवसर मिला है । वह स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के अग्रिम पंक्ति के नेता थे । मैंने कांग्रेस में उनकी निष्ठा को देखा है और वर्ष 1980-81 में जब वह कांग्रेस के अध्यक्ष थे तो समाचार पत्रों में बहुत दिनों तक उनकी चर्चा होती रही थी । माननीय श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह जब मुख्य मंत्री थे और वह कांग्रेस की बैठक में एक बार विलम्ब से पहुंचे तो श्री पाण्डेय जी ने उन्हें कड़ी डांट लगाई थी । इसलिए उनके कड़े स्वभाव की चर्चा समाचार-पत्रों में होती थी । वह कड़े स्वभाव के लिये जाने जाते थे । मुझे याद है श्री घनश्याम जी महासचिव थे तो उनकी हिम्मत नहीं थी कि श्री पाण्डेय जी के कमरे में चले जायें क्योंकि वह कड़े स्वभाव के थे । मान्यवर, स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास को उन्होंने लिखने का प्रयास किया था और काफी हद तक स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों का इतिहास उन्होंने लिखा । मान्यवर, वह उड़ीसा के राज्यपाल भी रहे थे और वह एक इतिहासकार के रूप में जाने जाते हैं । आज वह हमारे बीच में नहीं हैं । हम उनके प्रति अपनी ओर से और अपने दल की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए आपसे अनुरोध करता हूं कि उनके शोकाकुल परिवार तक हमारी और हमारे दल की शोक-संवेदनायें पहुंचाने की कृपा करें ।

मान्यवर, श्री बाबू लाल गोयल जी वर्ष 1991 में इस सम्मानित सदन के सदस्य रहे थे । उनका राजनीतिक जीवन ग्राम प्रधान, ब्लाक प्रमुख के रूप में लगातार ग्रामीण अंचल की सेवा में लगा रहा । वह एक प्रखर वक्ता थे । आज वह हमारे बीच में नहीं हैं । अपनी हृदय की गहराई से उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए मेरा आपसे अनुरोध है कि उनके शोक-संतप्त परिवार तक हमारी और हमारे दल की शोक-संवेदनायें पहुंचाने की कृपा करें ।

* श्री प्रमोद कुमार–

माननीय अध्यक्ष महोदय, स्व० गौरी शंकर भइया, स्व० विचित्र नारायण शर्मा स्व० विश्वम्भर नाथ पाण्डेय जी एवं स्व० बाबू लाल गोयल के निधन के संबंध में अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए जो विचार अभी माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल एवं माननीय अन्य दलों के नेताओं ने यहां व्यक्त किये हैं उनसे मैं अपने और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं । मान्यवर, यह सभी सदस्य विधान सभा के सदस्य रहे थे और उन्होंने अपने जीवन में समाज और प्रदेश की सेवा में बहुत बड़ा योगदान दिया था । मान्यवर, श्री गौरी शंकर भइया के साथ मुझे लम्बे समय तक रहने का मौका मिला है । उनका जीवन बड़ा तेजस्वी था । उनमें एक गुण यह भी था कि दल से ऊपर उठकर वह सदन के सभी साथियों के साथ एक ऐसा रिश्ता बनाकर रखते थे जिससे उनका अभाव व्यक्तिगत रूप से अखर रहा है । उनका अभाव व्यक्तिगत रूप से मुझे खटक रहा है । श्री विचित्र नरायण शर्मा जैसे महापुरुष ने देश की आजादी की लड़ाइयां लड़ीं जब देश आजाद हो गया तो देश के नव-निर्माण में अग्रणी भूमिका निभाई । अपना समस्त जीवन स्वदेश के लिए खादी के प्रचार प्रसार के लिए अर्पित कर दिया । उनका जीवन एक आदरणीय अनुकरणीय जीवन है जो यह साबित करता है कि सादा जीवन उच्च विचार रखकर महापुरुष इस देश में भूमिका निभाने के लिए आते हैं और जब वह जाते हैं तो जो रिक्तता छोड़कर जाते हैं वह पूरी नहीं होती है । विचित्र नारायण शर्मा जी कुशल प्रशासन, प्रखर व्यक्तित्व के कांग्रेस के समर्पित सिपाही थे । उन्होंने अपना सारा जीवन देश को आजाद कराने में लगा दिया । पंडित जवाहर लाल नेहरू जी और इंदिरा गांधी जी के साथ इन्होंने देश के नव निर्माण में भूमिका निभायी । यह इलाहाबाद के प्रथम मेयर रहे । इनके समय में कहा जाता था पानी की आपूर्ति इन्होंने ही सुनिश्चित

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

कराई थी । इस प्रकार इस सम्मानित सदन के सदस्य रहते हुए उन्होंने अपने कर्तव्यों का निर्वहन किया । श्रीमन्, हमारी और हमारे दल की शोक-संवेदनायें उनके शोक-संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें ।

* श्री कौकब हमीद–

मान्यवर, गौरी शंकर भइया जी इस सदन के चार बार मेम्बर रहे उनको व्यक्तिगत रूप से जानने का मौका मिला और उनकी कमी रहेगी अब उनसे मुलाकात नहीं हो पाएगी । श्री विचित्र नारायण शर्मा जी उन महापुरुषों में से थे जिन्होंने यह देश आजाद कराया और देश का नव निर्माण कराया । वह स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे । आजादी की लड़ाई के बाद उन्होंने अपना पूरा जीवन गांधी आन्दोलन के साथ खादी आन्दोलन के साथ गुजार दिया, श्री विश्वम्भर नाथ पाण्डेय जी के दर्शन हुए थे, उनसे मुलाकात हुई थी । उनसे बात करके पता लगता था जैसे आप किसी एक इतिहास के पन्ने टटोल रहे हैं मैं जातीय तौर पर मानता हूं वह बड़े इतिहासकार थे उन्होंने कुछ रचनाओं में बातें बताई हैं वह आमतौर पर हर इतिहासकार नहीं बताता है । श्री बाबू लाल गोयल जी यहां के एक बार मेम्बर रहे उन्होंने अपने कार्य का निर्वाह किया मैं अपने दल की ओर से और अपनी ओर से गुजारिश करूंगा कि हमारी शोक-संवेदनायें उनके परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें ।

श्री सुबाष चन्द्र श्रीवास्तव–

श्री गौरी शंकर भइया, श्री विश्वम्भर नाथ पाण्डेय, श्री विचित्र नारायण शर्मा, श्री बाबू लाल गोयल जी के निधन पर माननीय नेता सदन, नेता विपक्ष एवं अन्य दलों के सम्मानित नेताओं ने जो विचार व्यक्त किए हैं मैं अपने को उनसे सम्बद्ध करता हूं । श्री गौरी शंकर भइया जी ने इस देश में आपात् काल के दौरान स्व० लोक नायक जय प्रकाश नारायण की सम्पूर्ण क्रांति के आन्दोलन में बढ़-चढ़ कर अपना योगदान दिया । आपात् काल के दौरान आन्तरिक सुरक्षा कानून और भारतीय रक्षा अधिनियम के अन्तर्गत जेल की यातना सही । 1977 में पहली बार जनता पार्टी के अधिकृत प्रत्याशी के तौर पर इस सदन के सदस्य निर्वाचित होकर आए और चार बार इस सम्मानित सदन के सदस्य रहे । बहुत अल्प आयु में मृत्यु के क्रूर हाथों ने इस तेजस्वी युवा नेता को हमसे छीन लिया श्री गौरी शंकर भइया के असामयिक निधन पर मैं तथा अपने दल की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपसे निवेदन करता हूं कि हमारी और हमारी पार्टी की शोक-संवेदना उनके परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें ।

श्री विचित्र नरायण शर्मा जी की राष्ट्रीय आन्दोलन में गांधी जी के नेतृत्व में उनकी अग्रणी भूमिका थी । छात्र जीवन से ही बापू के आवाहन पर विद्यालय छोड़कर राष्ट्रीय आन्दोलन के महायज्ञ में अपना योगदान देने के लिए उन्होंने संकल्प लिया । शर्मा जी इस देश के अन्दर खादी आन्दोलन और गांधी आश्रम की नींव डाली । महात्मा गांधी जी की स्वदेशी आन्दोलन की अवधारणा को सफल बनाने में विचित्र नरायण शर्मा जी एक स्तम्भ के रूप में याद किए जाएंगे । इस देश में स्वदेशी आन्दोलन को सर्वाधिक ख्याति शर्मा जी ने दिलवाई । मैं श्री विचित्र नरायण शर्मा के निधन पर गहरा दुःख व्यक्त करता हूं और श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं । मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि आप मेरी और मेरे दल की संवेदना उनके परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें ।

श्री विश्वम्भर नाथ पाण्डेय जी आदरणीय शर्मा की तरह स्वाधीनता संग्राम के सेनानी रहे । वह महात्मा गांधी जी के पक्के अनुयायी रहे । पाण्डेय जी का योगदान काव्य में, साहित्य में, संस्कृति में और

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

इतिहास में बराबर याद किया जाता रहेगा । पाण्डेय जी इस सम्मानित सदन के एक बार सदस्य रहे । पाण्डेय जी के निधन से इस प्रदेश और देश ने एक कुशल नेता, समाज सेवी, इतिहासकार खो दिया । मैं अपनी ओर से और अपने दल की ओर से उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपसे अनुरोध करता हूं कि उनके परिवार तक हमारी शोक-संवेदना पहुंचाने की कृपा करें ।

श्री बाबू लाल गोयल जी भारतीय जनता पार्टी से 1991 के मध्यावधि चुनाव में निर्वाचित होकर इस सदन के सदस्य रहे । उन्होंने सम्पूर्ण जीवन काल अपने विचारों के प्रति प्रतिबद्ध होकर बराबर जनता की सेवा की । गोयल जी के निधन से इस प्रदेश ने और आगरा जनपद ने एक कुशल नेता खो दिया है। मैं अपनी ओर से और अपनी पार्टी की ओर से शोक-संवेदना अर्पित करता हूं और आपसे अनुरोध करता हूं कि उनके परिवार तक हमारी शोक-संवेदना पहुंचाने की कृपा करें ।

* श्री राम कृपाल–

माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे 4 भूतपूर्व साथी हमारे बीच नहीं रहे हैं । उनके बारे में माननीय नेता सदन, नेता विरोधी दल एवं अन्य माननीय नेताओं ने जो विचार व्यक्त किये हैं, उनसे मैं अपने को सम्बद्ध करता हूं, मेरा आपसे अनुरोध है कि मेरा और मेरे दल की शोक-संवेदनायें उनके शोक-संतप्त परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें ।

[माननीय नेता जनता दल (राजाराम पाण्डेय) के अनुपस्थित होने पर]

वन मंत्री (श्री रघुबर दयाल वर्मा)–

माननीय अध्यक्ष जी, श्री गौरी शंकर भइया, श्री विचित्र नारायण शर्मा, श्री विशम्भर नाथ पाण्डेय एवं श्री बाबू लाल गोयल जी के सम्बन्ध में माननीय नेता सदन, नेता विरोधी दल एवं अन्य दलों के माननीय नेताओं ने जो शोक भाव व्यक्त किये हैं, उनसे मैं अपने को सम्बद्ध करता हूं । श्रीमन्, श्री गौरी शंकर भइया हमारे साथ समाजवादी आन्दोलन से जुड़े हुये एक नौजवान व्यक्ति थे । हमारे साथ ही विधान सभा में रहकर उन्होंने किसानों, मजदूरों के सवालों को विधान सभा में उठाया, वह बहुत ही जुझारू व्यक्तित्व के धनी थे । श्रीमन्, आपात् काल में जय प्रकाश जी के आन्दोलन में उन्होंने आगे आकर के जो भूमिका निभायी वह हमेशा याद रहेगा । श्री गौरी शंकर भइया का असामयिक निधन दुर्घटनावश हो गया । हमें उनके इस निधन पर हार्दिक दुःख है ।

श्री शर्मा जी और पाण्डेय जी ने राष्ट्रीय आन्दोलन में रहकर हमारे देश की तथा विधान सभा में रहकर हमारे प्रदेश की जो सेवायें की हैं वह हमेशा याद रहेगी ।

श्री बाबू लाल जी गोयल, हमारे बहुत निकट के साथी रहे हैं, वह आगरा जनपद के रहने वाले थे । उन्होंने हमेशा सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्रों में अग्रणी भूमिका अदा की । जनसेवा में उनकी विशेष अभिरुचि थी । उनके निधन से आगरा जनपद ने एक समाजसेवी व्यक्तित्व को खो दिया है । इन शब्दों के साथ मेरा आपसे अनुरोध है कि हमारी शोक-संवेदनायें उनके शोक-संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें ।

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

* श्री भरत सिंह–

माननीय अध्यक्ष जी, अभी पिछले दिनों जनपद बलिया के कोपाचीट विधान सभा क्षेत्र के विधायक रहे श्री गौरी शंकर भइया की असामयिक मृत्यु हो गयी । गौरी शंकर भइया बलिया जनपद में छात्र राजनीति के अगुवा रहे हैं, जे०पी० मूवमेण्ट में बढ़-चढ़कर भाग लिया । इमरजेंसी में मीसा में बन्द रहे । सन् 1977 से लेकर 1989 तक लगातार चार बार विधायक रहे हैं । ऐसे गौरी शंकर भइया की मृत्यु से जनपद बलिया और पूर्वांचल की अपार क्षति हुई है । मेरी ईश्वर से प्रार्थना है कि ईश्वर उनके शोक-संतप्त परिवार को शांति दे । गौरी शंकर भइया का सबसे बड़ा बच्चा 13 वर्ष का है, उनका परिवार बड़े संकट में है । इन शब्दों के साथ मैं उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं ।

श्री अध्यक्ष–

विधान सभा के पिछले उपवेशन और आज के बीच में इस विधान सभा के चार पूर्व माननीय सदस्यों का निधन हो गया । सभी ने भिन्न-भिन्न समय पर इस सदन की सेवा विभिन्न रूप में की । श्री गौरी शंकर भइया चार बार इस सम्मानित सदन के सदस्य थे और उनमें से दो बार मुझे उनके साथ इस सदन का सदस्य रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है । अपने सरल स्वभाव, राजनीतिक प्रतिबद्धता, गम्भीर विचार-शैली के कारण श्री गौरी शंकर भइया सहज ही हम सबके आकर्षण के केन्द्र थे । एक बहुत ही सक्रिय सदस्य के रूप में उन्होंने अपनी भूमिका का निर्वाह किया ।

स्वर्गीय श्री विचित्र नारायण शर्मा मृत्युपर्यन्त गांधी युग से वर्तमान युग को जोड़े रहे । स्वदेशी और आर्थिक आत्मनिर्भरता उनका मूल मंत्र रहा । उनकी सेवाओं के लिये 24 नवम्बर, 1992 को इस सदन में उन्हें सम्मानित भी किया गया था ।

स्वर्गीय श्री विश्वम्भर नाथ पाण्डेय से मैं व्यक्तिगत रूप से परिचित था । मुझे बहुत अच्छी तरह से स्मरण है, जब 1952 में वह इलाहाबाद से चुनाव लड़े थे, उसी समय से उनके राजनीति व्यक्तित्व की छाप राजनीतिक क्षेत्र में पड़ने लगी थी और धीरे-धीरे वह प्रदेश और अखिल भारतीय स्तर तक दिखाई पड़ी । वह कांग्रेस के न केवल समर्पित कार्यकर्ता वरन् एक प्रसिद्ध योद्धा के रूप में उभरकर सामने आये। वह महात्मा गांधी के अनुयायी थे तथा पंडित जवाहर लाल नेहरू के वह बहुत निकट थे । एक इतिहासकार के रूप में अपनी दृष्टि से उन्होंने इतिहास को लिखने का प्रयास किया । एक साहित्यकार के रूप में उनकी रचनायें बहुत प्रसिद्ध हैं । एक कवि के रूप में भी लोगों ने उन्हें देखा है, उनको भी 24 नवम्बर, 1992 को इस सदन की सेवाओं के लिये सम्मानित किया गया था ।

श्री बाबू लाल गोयल यद्यपि एक ही बार इस सदन के सदस्य रहे, लेकिन शिक्षण संस्थाओं के माध्यम से वह शिक्षा जगत की लगातार सेवा करते थे । वह काफी समय तक ग्राम प्रधान रहे । इन चारों दिवंगत नेताओं के निधन से देश में, प्रदेश में एक अभाव सा लग रहा है, अत्यन्त अपूर्णनीय क्षति हुई है, उसे पूरा कर पाना कठिन है । माननीय नेता सदन, माननीय नेता विपक्ष तथा अन्य दल के नेताओं ने जो शोकोद्गार व्यक्त किये हैं, मैं उनसे अपने को सम्बद्ध करता हूं और इन संवेदनाओं को मैं उनके शोक-संतप्त परिवारजनों तक पहुंचा दूंगा । अब मैं सबसे अनुरोध करता हूं इन चारों दिवंगत आत्माओं की शान्ति के लिये दो मिनट मौन धारण करें ।

(दिवंगत आत्माओं की शान्ति के लिए सभी माननीय सदस्य दो मिनट मौन खड़े हुए)

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

* श्री संजय गर्ग–

मान्यवर, इस सदन में जिन दिवंगत लोगों के शोकोद्गार प्रकट किये गये हैं, उसमें जिला सहारनपुर से दो बार निर्वाचित इस सदन के सदस्य श्री (डा०) जय गोपाल जी का नाम छूट गया है, वह वर्ष 1956 तथा 1962 में निर्वाचित होकर इस सदन में आये ।

श्री अध्यक्ष–

पहले अधिकृत सूचना आ जाने दीजिये । हम लोग पहले जिलाधिकारी से पुष्टि कराते हैं, उसके पश्चात् सदन में लाते हैं । पुष्टि हो जायेगी तो उनके निधन का निदेश यहां आ जायेगा ।

राजस्थान के महामहिम राज्यपाल श्री दरबारा सिंह के निधन पर शोकोद्गार

* मुख्य मंत्री (श्री कल्याण सिंह)–

माननीय अध्यक्ष जी, एक और महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी और राजस्थान के राज्यपाल श्री दरबारा सिंह भी हमारे बीच में अब नहीं रहे हैं । वह उस उस पीढ़ी के महान व्यक्ति थे जिस पीढ़ी ने देश की आजादी की लड़ाई में अपना सब कुछ न्योछावर किया । उस पीढ़ी के प्रति समूचा देश और समूचा समाज चिर-ऋणी रहेगा क्योंकि उनकी त्याग, तपस्या और बलिदान के फलस्वरूप आज हम सब आजाद देश के आजाद नागरिक की सम्मानित जिन्दगी जी रहे हैं ।

श्रीमन्, श्री दरबारा सिंह जी का निधन 24 मई, 1998 को हो गया । उनका जन्म 25 फरवरी, 1927 में लायलपुर जनपद में हुआ था जो आजकल पाकिस्तान में है । वह 1942 में भारत छोड़ो आन्दोलन में कूदे थे । देश की आजादी की लड़ाई में भाग लिया था । देश आजाद होने के पश्चात् 1964 में वह वहां के जिला परिषद् के सदस्य निर्वाचित हुए, 1967, 1969 और 1972 में पंजाब विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए, 1972 से 1973 के बीच पंजाब विधान सभा के अध्यक्ष रहे, 1968–1969 तक वह उप मंत्री रहे, 1 मई, 1998 को वह राजस्थान के राज्यपाल बने । उन्होंने सादा जीवन जिया, उच्च विचारों से समाज को प्रेरित किया । उनके निधन से देश ने एक महान स्वतंत्रता सेनानी और एक महान समाजसेवी खो दिया है । मैं अपनी ओर से और सदन की ओर से उनके प्रति पूरे सम्मान के साथ श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि उनकी दिवंगत आत्मा को शांति दे, सद्गति दे और उनके सम्पूर्ण शोकाकुल परिवार को इस गहरे आघात को सहन करने की क्षमता दे । मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि मेरी यह शोक-संवेदनाएं उनके शोक-संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें ।

*नेता विरोधी दल (श्री धनीराम वर्मा)–

श्रीमन्, मैं माननीय नेता सदन के विचारों से अपने को सम्बद्ध करते हुए कहना चाहता हूं कि स्वर्गीय दरबारा सिंह जी हमारे देश के स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों में से एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने 1942 में स्वतंत्रता संग्राम में कूदकर अग्रणी भूमिका निभाई थी । उन्होंने अपने त्याग और बलिदान से, त्याग और तपस्या से देश को आजाद कराया लेकिन वह अल्पायु में ही हमसे बिछुड़ गये । परन्तु उन्होंने अपने 71 वर्ष के जीवन में समाज और देश के लिए जो किया है वह हमेशा यह देश और समाज याद करता रहेगा । समाज सेवा के कारण ही वह तीन बार विधान सभा के सदस्य चुने गये और एक वर्ष तक

लगभग वह पंजाब विधान सभा के अध्यक्ष भी रहे और लगभग एक वर्ष तक ही पंजाब सरकार में उप मंत्री भी रह चुके थे । श्रीमन्, 1 मई को ही उन्होंने राज्यपाल के रूप में कार्य प्रारम्भ किया था । उनकी सेवाएं समाज को और आगे न मिल पायें, देश को उच्च विचार प्राप्त न होने पाये, ईश्वर को यही मंजूर था कि वह उनके सानिध्य में रहें इसलिए उनका स्वर्गवास सम्भवतः हुआ । आज जो विचार उन्होंने दिये, उन्होंने जो सेवाएं कीं उसके आधार पर हम उत्तर प्रदेश में रहकर इस विधान सभा में उनके प्रति अपनी शोक-संवेदनाएं प्रकट कर रहे हैं । अगर वे महान व्यक्ति न होते, देश के लिये उनकी सेवायें नहीं होतीं और प्रदेश तक ही सीमित रहे होते, तो शायद हम उनको यहां याद नहीं करते । श्रीमन्, मैं अपनी ओर से, अपने दल की ओर से और सम्पूर्ण सदन की ओर से ईश्वर से यह प्रार्थना करता हूं कि वे उनकी आत्मा को शाश्वत शांति दे और शोक-संतप्त परिवार को धैर्य धारण करने की क्षमता प्रदान करे । इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपनी शोक श्रद्धांजलि उनके प्रति अर्पित करता हूं और आपसे निवेदन करता हूं कि हमारी यह शोक-संवेदनायें उनके परिवारजन तक पहुंचाने की कृपा करें ।

श्री स्वामी प्रसाद मौर्य–

मान्यवर, श्री दरबारा सिंह जी एक महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी और कुशल प्रशासक थे और बहुमुखी प्रतिभा के व्यक्ति थे । विधान परिषद् में और विधान सभा में माननीय सदस्य के रूप में रहकर जनता की समस्याओं को समय-समय पर उठाते रहे और उन्हें मंत्री के रूप में भी काम करने का मौका मिला और लोक सभा के भी माननीय सदस्य के रूप में सेवा करने का उन्हें सुअवसर मिला और उनकी इस बहुमुखी प्रतिभा को देखकर उन्हें राजस्थान में राज्यपाल के रूप में भी काम करने का सुअवसर मिला । ऐसी बहुमुखी प्रतिभा के धनी श्री दरबारा सिंह जी आज हमारे बीच में नहीं हैं हम इस बहुआयामी नेता के निधन से दुखी हैं और इस दुखद घड़ी पर हम अपनी ओर से एवं अपने समस्त माननीय सदस्यों की ओर से शोक श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं एवं आपसे अनुरोध करते हैं कि उनके शोक-संतप्त परिवार तक हमारी भावनायें, हमारे सब साथियों की ओर से व्यक्त की गयीं शोक-संवेदनायें पहुंचाने का कष्ट करें ।

लघु सिंचाई ग्रामीण अभियन्त्रण मंत्री (श्री मारकण्डेय चन्द)–

मान्यवर, इस देश के महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी श्री दरबारा सिंह के निधन पर माननीय नेता सदन, माननीय नेता विपक्ष तथा माननीय नेता बहुजन समाज पार्टी ने जो भावनायें व्यक्त की हैं हम अपने दल को भी उससे सम्बद्ध करते हैं । मान्यवर, मैं अपनी ओर से और अपने दल की ओर से स्व० श्री दरबारा सिंह जी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं । मैं अपने दल तथा अपनी ओर से शोक-संवेदना व्यक्त करते हुए आपसे प्रार्थना करता हूं कि हमारे ये शोक-संवेदना के भाव उनके परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें ।

(नेता, लोकतांत्रिक कांग्रेस पार्टी का नाम पुकारे जाने पर, वह खड़े नहीं हुए ।)

श्री प्रमोद कुमार–

मान्यवर, श्री दरबारा सिंह जी के निधन से एक ऐसे व्यक्ति के जीवन का सूर्यास्त हुआ, जिनका राजनैतिक जीवन क्रांतिधाम से प्रारम्भ होकर, जिला पंचायत से प्रारम्भ होकर, विधान सभा की इस गरिमामयी अध्यक्षपीठ तथा राज्यपाल तक रहा । वह एक कुशाग्र विद्यार्थी के रूप में इंजीनियर भी बने परन्तु उन्होंने समाज सेवा के क्षेत्र को चुना । शिक्षा क्षेत्र में विशेष रुचि होने के कारण वह कई शिक्षण

अपनी ओर से तथा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की ओर से उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपसे प्रार्थना करता हूं कि हमारे ये शोक-संदेश उनके परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

मान्यवर, एक आग्रह और करना चाहता हूं, इसे आप अन्यथा न लें, आज राज्य सभा और विधान परिषद् के चुनाव हैं, तो जब कल से स्वर्गीय सम्मानित सदस्यों के प्रति जब इस आदरणीय सदन के माननीय सदस्य अपनी भावनायें व्यक्त कर रहे हों, तो उसे चुनाव के दिन न रखें। यहां पर सदस्यों की संख्या को देखकर भी मुझे दुख हो रहा है क्योंकि जिस रूप में हम भावनायें व्यक्त करना चाहते हैं, उस रूप में नहीं कर पाते हैं, इसलिये मेरा पुनः आग्रह है कि शोक-संवेदनायें आप चुनाव के दिन निर्धारित न करें।

श्री कौकब हमीद–

श्री दरबारा सिंह, भूतपूर्व राज्यपाल (राजस्थान) जी का व्यक्तित्व किसी की तारीफ का मोहताज नहीं है। वह एक महान नेता तथा स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे, उनके निधन से केवल इस सदन को ही नहीं अपितु पूरे देश को धक्का लगा। वह एक कुशल व्यक्ति थे, जिस-जिस पद पर भी वह रहे, उस पर उन्होंने कुशलतापूर्वक कार्य किया। मैं अपनी ओर से और अपने दल की ओर से शोक-संवेदना प्रकट करता हूं और आपसे गुजारिश करता हूं कि शोक-संवेदना के ये भाव उनके परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

श्री सुबाष चन्द्र श्रीवास्तव–

माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय श्री दरबारा सिंह जी के निधन से, न केवल पंजाब ने अपितु इस देश ने एक महान नेता व कुशल प्रशासक खो दिया है। श्री सिंह स्वतंत्रता संग्राम के एक महान सेनानी थे तथा राष्ट्रीय आन्दोलन के क्षितिज के एक देदीप्यमान नक्षत्र थे, उनके निधन से उस नक्षत्र का अस्त हो गया। सम्पूर्ण जीवन भर उन्होंने अपने तरीके से और अपने विचारों से इस देश की भरपूर सेवा की। आज उनके निधन से हम सभी दुखी हैं। मैं अपनी ओर से तथा अपनी पार्टी की ओर से उन्हें शोक-श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपसे अनुरोध करता हूं कि हमारे शोक-संवेदना के भाव उनके शोक-संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

* श्री राम कृपाल–

मान्यवर, श्री दरबारा सिंह जी के निधन से न केवल पंजाब ने अपितु देश ने एक अच्छा नेता खो दिया है। माननीय नेता सदन, नेता प्रतिपक्ष, नेता बहुजन समाज पार्टी, नेता भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, नेता भारतीय किसान कामगार पार्टी ने जो विचार प्रकट किये हैं, उन विचारों से अपने को जोड़ते हुए आपसे चाहूंगा कि हमारे भी शोक-संवेदना के भाव उनके परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

(श्री राजाराम पाण्डेय जी का नाम पुकारे जाने पर वह उपस्थित नहीं थे)

वन मंत्री (श्री रघुबर दयाल वर्मा)–

मान्यवर, माननीय नेता सदन, माननीय नेता प्रतिपक्ष तथा अन्य माननीय नेताओं ने जो श्री दरबारा सिंह जी के संबंध में शोकोद्गार व्यक्त किये हैं, मैं उनसे अपने को सम्बद्ध करते हुये यह कहना चाहूंगा कि उनके द्वारा जो सेवाएं की गयी हैं, देश के लिए वह हमेशा याद रहेंगी। उनके निधन से इस देश को

क्षति हुई है । मेरा आपसे अनुरोध है कि हमारी शोक-संवेदनाएं उनके परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें ।

श्री अध्यक्ष–

राजस्थान के राज्यपाल पद पर आसीन रहते हुए देश के सुप्रसिद्ध राजनीतिज्ञ, श्री दरबारा सिंह जी का निधन हो गया । एक इंजीनियर के रूप में उनके सामने सफल जीवन था, लेकिन देश भक्ति से प्रेरित होकर उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया । अपना राजनीतिक जीवन ग्राम सभा से शुरू कर वे लोक सभा के सदस्य हुए और फिर राजस्थान के राज्यपाल हुए । वे तीन बार पंजाब विधान सभा के लिए सदस्य चुने गये, एक बार पंजाब विधान सभा के अध्यक्ष रहे तथा एक बार पंजाब सरकार में उप मंत्री रहे । इन्हीं सेवाओं के कारण उन्हें राष्ट्रीय सम्मान मिला । उनके निधन से आज हम सभी दुखी हैं । माननीय नेता सदन, माननीय नेता प्रतिपक्ष तथा अन्य नेताओं ने जो विचार व्यक्त किये हैं मैं उससे अपने को सम्बद्ध करते हुए ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनकी दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करे और उनके परिवार को यह दुख सहन करने की शक्ति प्रदान करे । माननीय प्रमोद कुमार जी ने जो विचार निधन के निदेश के दिनों के संबंध में व्यक्त किये है उस पर मैं ध्यान रखूंगा । थोड़ी सी हमारी भी संवेदनहीनता प्रतीत होती है । अब मैं आप लोगों से अनुरोध करूंगा हम दिवंगत आत्मा की शांति के लिए दो मिनट का मौन धारण करें । (दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए सभी माननीय सदस्य दो मिनट मौन खड़े हुए ।)

मैं आप सभी की भावनाएं उनके शोक-संतप्त परिवार तक पहुंचा दूंगा । अब हम उठते हैं, कल 11.00 बजे पुनः मिलेंगे ।

(इसके बाद सदन 12 बजकर 45 मिनट पर अगले दिन के 11 बजे तक के लिये स्थगित हुआ)

लखनऊ :
18 जून, 1998

प्रेम चन्द्र सक्सेना,
सचिव, विधान सभा,
उत्तर प्रदेश ।

पी० एस० यू० पी०–एल० 195 विधान सभा (287)–1998–813 (डी० टी० पी०) ।